CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH-6

|| the gurukul ||

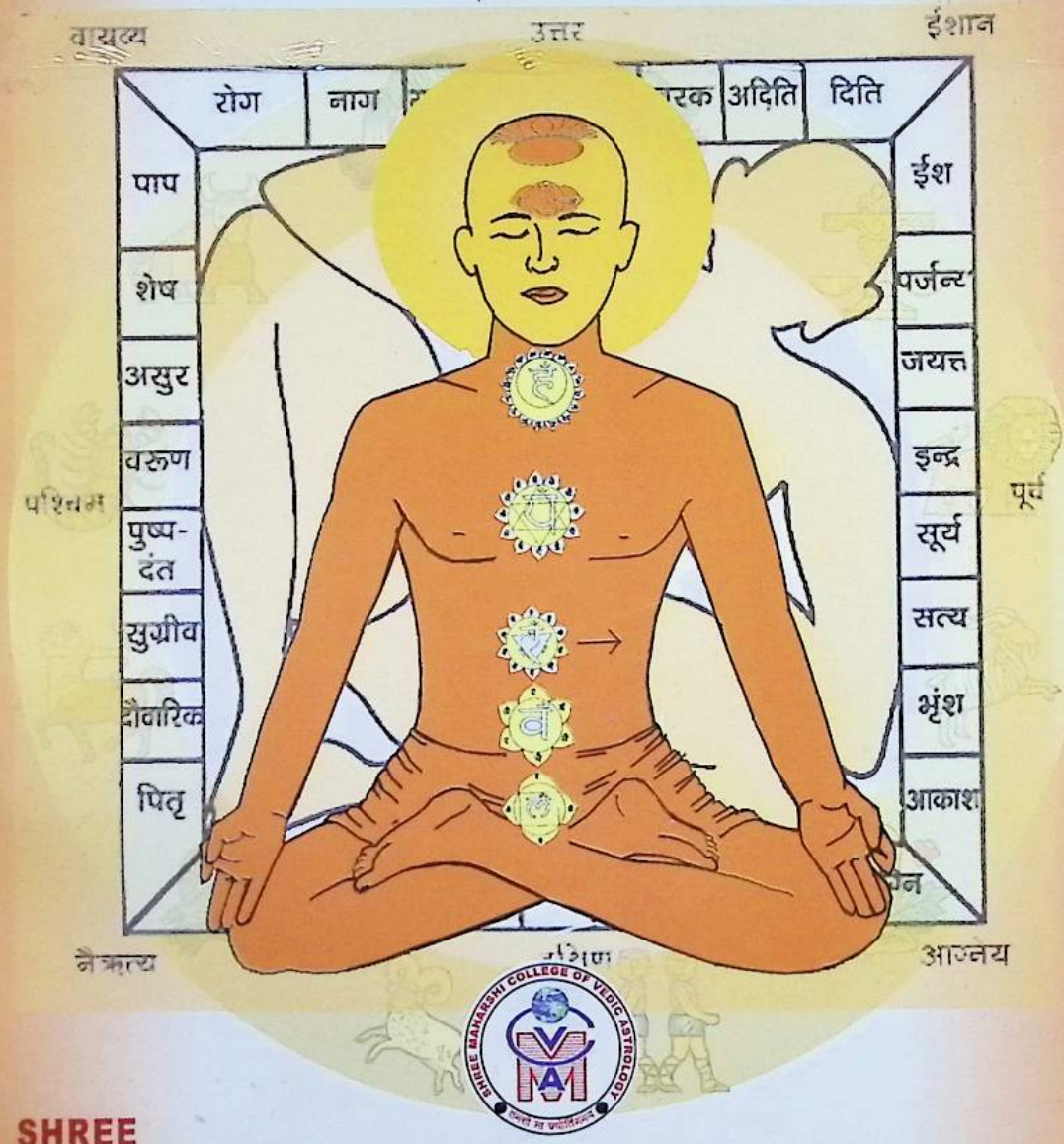

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 6

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	:	बुध पर्वत क्षेत्र	03–18
अध्याय 2	:	मंगल पर्वत क्षेत्र	19–53
अध्याय 3	:	चंद्र पर्वत क्षेत्र	54–70
अध्याय 4	:	शुक्र पर्वत क्षेत्र	71–88

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध पर्वत क्षेत्र

हथेली में सबसे छोटी अंगुली कनिष्ठिका के उद्गम स्थल का क्षेत्र बुध पर्वत क्षेत्र कहलाता है।

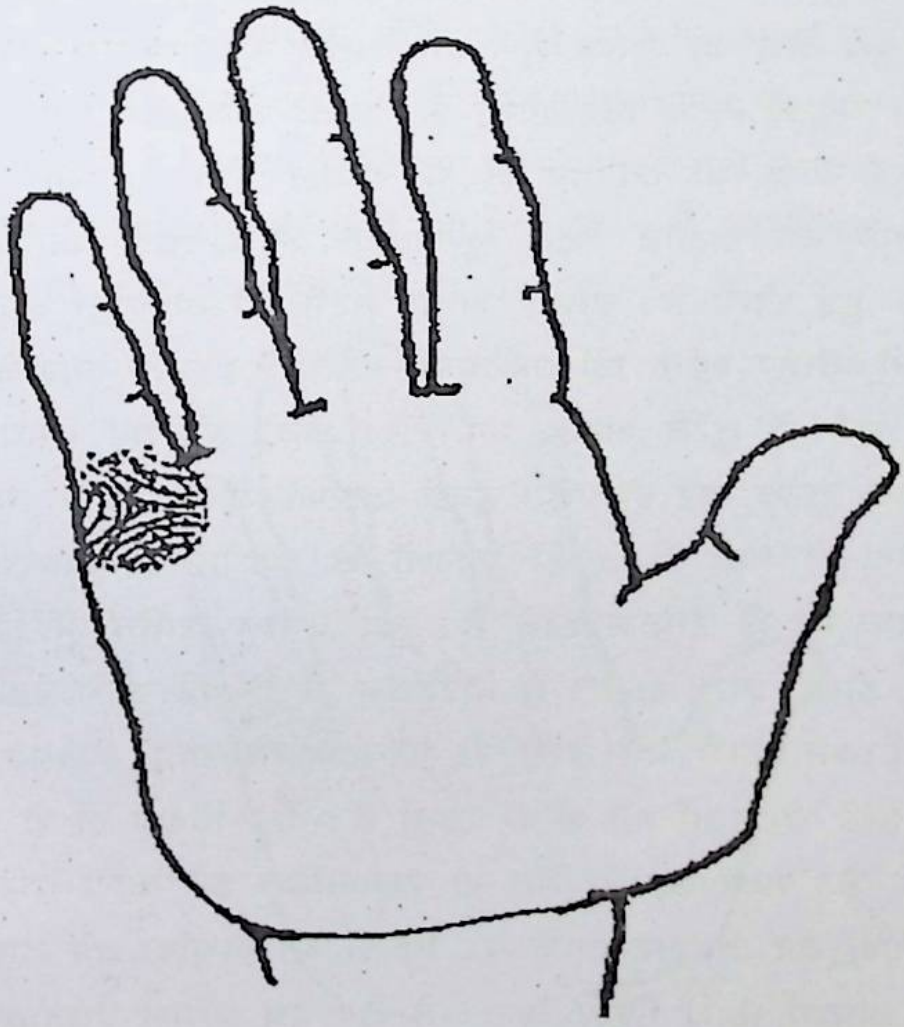

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवहारिक तौर पर जीवन के क्रियाकलापों को प्रभावति करने के कारण यह जय का स्थान भी माना गया है। स्वयं बुध ग्रह के गुण होने के साथ इस ग्रह में सबसे विलक्षण बात यह है कि अन्य ग्रहों के साथ सामंजस्य करते हुये शुभ गुणों को जातक को प्रदान करता है। अशुभ प्रभावों में यह ग्रह अशुभ बन जायेगा अर्थात् इसके भौतिक गुण परिवर्तनशील है। बुध क्षेत्र का मुख्य गुण वाकचातुर्य है। बुध प्रधान जातक वाक पटुता में माहिर होता है। अतः अच्छे ज्योतिष, अच्छे कानून विद् या व्यापार में ये सफल होते है। बुध प्रधान जातक का ललाट बड़ा, मुखाकृति लंबी, बड़ी आंखे तेज लिये हुई होती है। इनकी भाषा शैली भी अलंकृत होती है। इनमें विचार शक्ति की अधिकता रहती है। अतः सामने वाले की बातें ये तुरंत समझ जाते है। अच्छे बुरे की पहचान ये जातक तुरंत कर लेते है। इन्हीं कारणों से ये त्वरित व सही निर्णय ले पाते है। इन्हीं कारणों से व्यापार व व्यवसाय में जातक काफी सफल होते है। बुध प्रधान व्यक्ति में स्थिरता नही होती, अतः भ्रमण व परिवर्तन में इनकी रूचि रहती है। किसी भी कार्य को तेजी से निपटाना इनका स्वभाव होता है। इन्हें यात्राओं का शोक रहता है। देश–विदेश में ये भ्रमण करते है। तथा अपने हित से सम्भावित हर कार्य करते है। वे लाभ का अवसर आने पर किसी भी मर्यादा को ताक पर रख अपना कार्य सिद्ध कर लेते है। बुध प्रधान जातक बहुत फुर्तिला होता है। सामान्य लोगों से वह अधिक कार्यशील

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहता है। परंतु शारीरिक श्रम के बजाय मस्तिष्क व विचारों से तेज होता है। शारीरिक भ्रम में ये जातक कतराते है परंतु खेलों मे अपनी बुद्धि का उपयोग कर उसमें विजय प्राप्त करते है। मेलजोल में तुरंत मित्रता कर लेते है और तुरंत जन समुदाय को प्रभावित कर लेते है। वाक शक्ति व अलंकृत भाषा शैली इनके व्यक्तित्व में चार चांद लगा देती है।

विचार शक्ति अधिक होने से ये जातक अच्छे गणितज्ञ होते है अतः वैज्ञानिक कार्य या अनुसंधान के कार्यो में अग्रणी होते है। प्रायः चिकित्सा क्षेत्रों में काफी सफल रहते है। बुध पर्वत क्षेत्र में खड़ी सीधी रेखा इन्हें चिकित्सा क्षेत्रों में उन्नति प्रदान करती है।

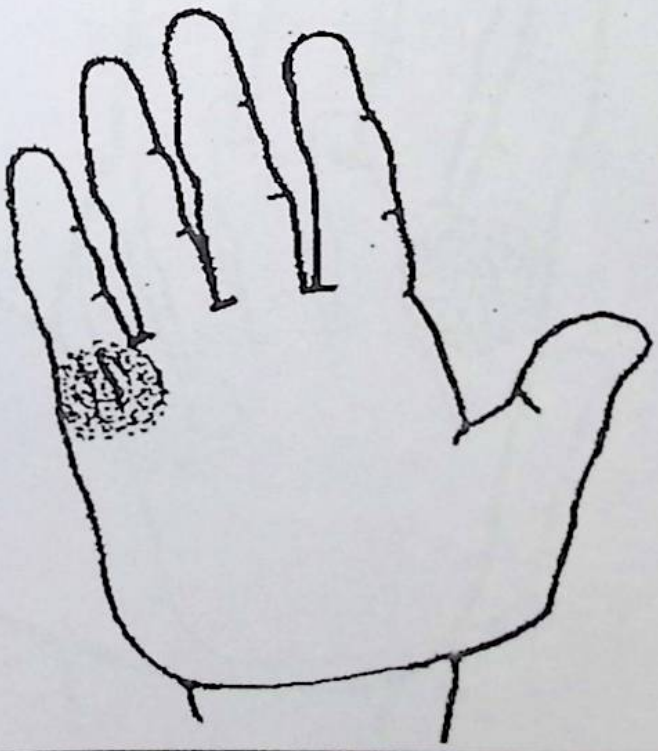

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. उन्नत बुध क्षेत्र

छोटी अंगुली कनिष्ठिका के उद्‌गम वाला क्षेत्र यदि उन्नत है तो यह जातक के गुणों में स्वर व श्वास नली का अद्‌भुत सम्मिश्रण होता है। जातक तेजी से बोलने वाला, विचार शक्ति से धारा प्रवाह लिखने वाला होता है। अच्छे उन्नत बुध क्षेत्र वाला जातक त्वरित निर्णय लेने में सक्षम होता हैं।

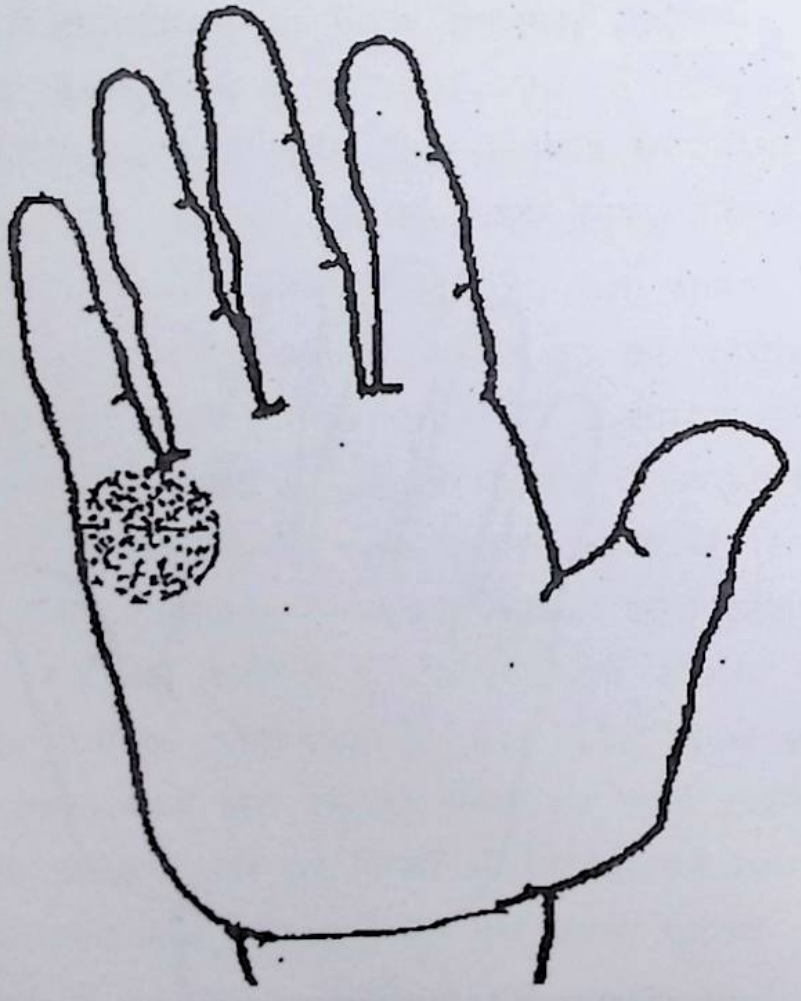

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतः कार्य करने में गतिशीलता रहती है। वह एक अच्छा खिलाड़ी, पत्रकार, प्रभावशाली जन नेता या प्रसिद्ध लेखक होता है। परिवर्तनशील विचार धारा होने से भ्रमण कार्यो व देश विदेश की यात्राओं का शौकीन होता है। इनसे संबंधित कार्यो में बुध प्रधान जातक ही होते है। अच्छी भाषा शैली होने से व्यापार कुशाग्र बुद्धि का स्वामी होता है। प्रायः ऐसे जातक को चिकित्सा के क्षेत्रों में काफी सफलता हासिल होती है। प्रायः बुध प्रधान जातक स्वस्थ होते हैं।

ब. अतिविकसित हाथ

अतिविकसित बुध क्षेत्र वाले जातक अधिक बुद्धि चातुर्य होने से लोगों को प्रभावित कर लेते है।

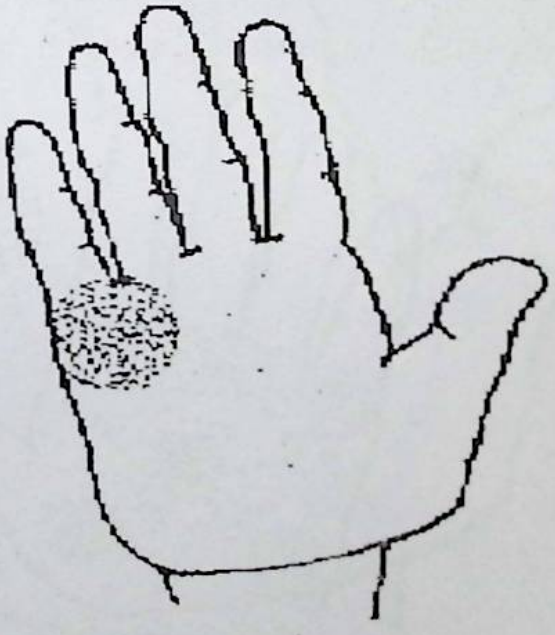

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक स्वार्थ सिद्धि के लिये अन्य लोगों को बेवकुफ बनाना भी शुरू कर सकते है जिससे वे छल व कपटी हो जाते है। बुरी संगत में पढ़कर चातुर्य का इस्तेमाल गलत कार्यो में कर के अपराधिक श्रेणी में भी आ सकते है।

स. अविकसित या धंसा हुआ बुध क्षेत्र

बुध एक ग्रह है जो अपने गुणों के साथ दूसरे ग्रह क्षेत्रों के गुण व अवगुण को भी बढ़ाता या घटाता है। अच्छे गुणों के साथ बुध का प्रभाव अच्छा व उन्नति दायक होता है। इसी प्रकार अवगुणों के साथ इसका अशुभ प्रभाव फलदायक हो जाता है। ऐसी स्थिति मे बुध के गुण तो वही रहते है पर अविकसित बुध क्षेत्र में इन गुणों का उपयोग अच्छे कार्यो में नहीं कर गलत कार्यो में होता है। जातक अपनी बुद्धि व वाक चातुर्य का उपयोग षड़यंत्र, अपराधिक कार्य, धोखा धडी. जालसाजी. इत्यादि में कर सकता है।

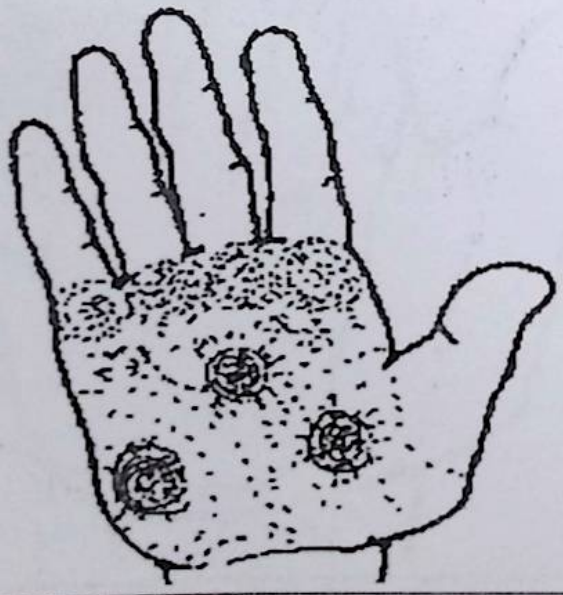

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हथेली के अन्य गुणों, अंगुलियों की बनावट, त्वचा का रंग हथेली पर रेखाओं की स्थिति, चिन्ह, इत्यादि बुध क्षेत्र के गुणों व अवगुणों में अधिकता या कमी लाते है।

1. बुध क्षेत्र व अंगुलियों की बनावट

बुध प्रधान जातक की अंगुलियां (कनिष्ठिका) नुकीली हो तो जातक ओजस्वी वक्ता एवं अच्छा वकील हो सकता हैं।

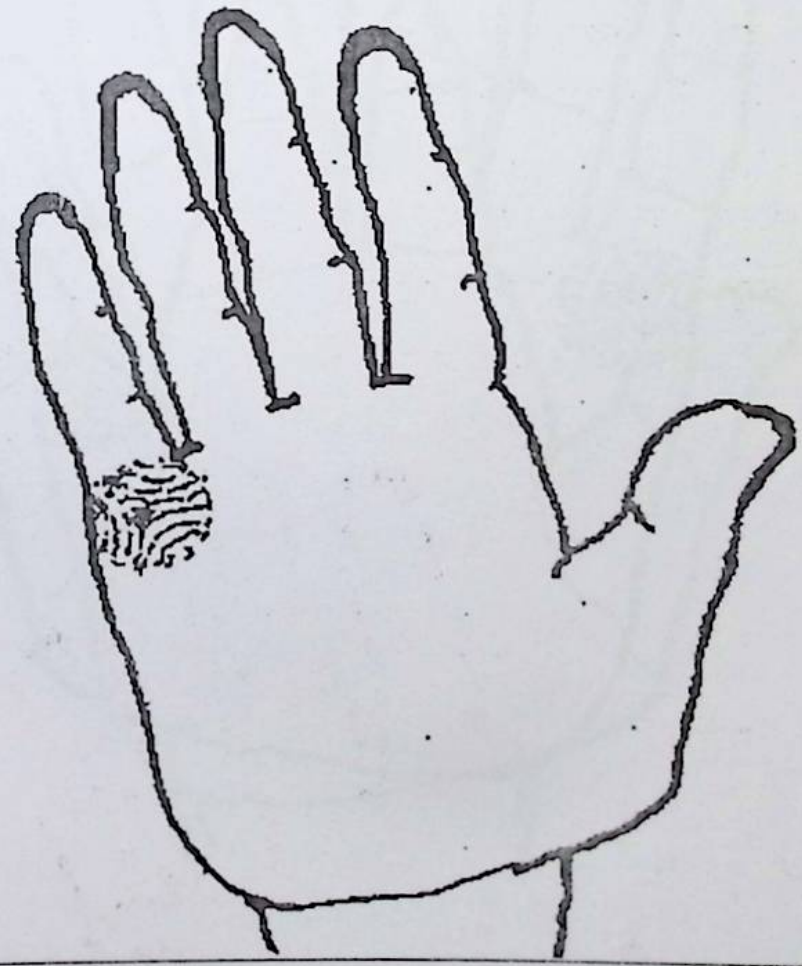

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुली के बीच का पर्व बड़ा हो तो वैज्ञानिक या अच्छे चिकित्सक होने के लक्षण है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसरा पर्व बड़ा हो तो व्यापार कुशल व काफी धन उपार्जन करता है।

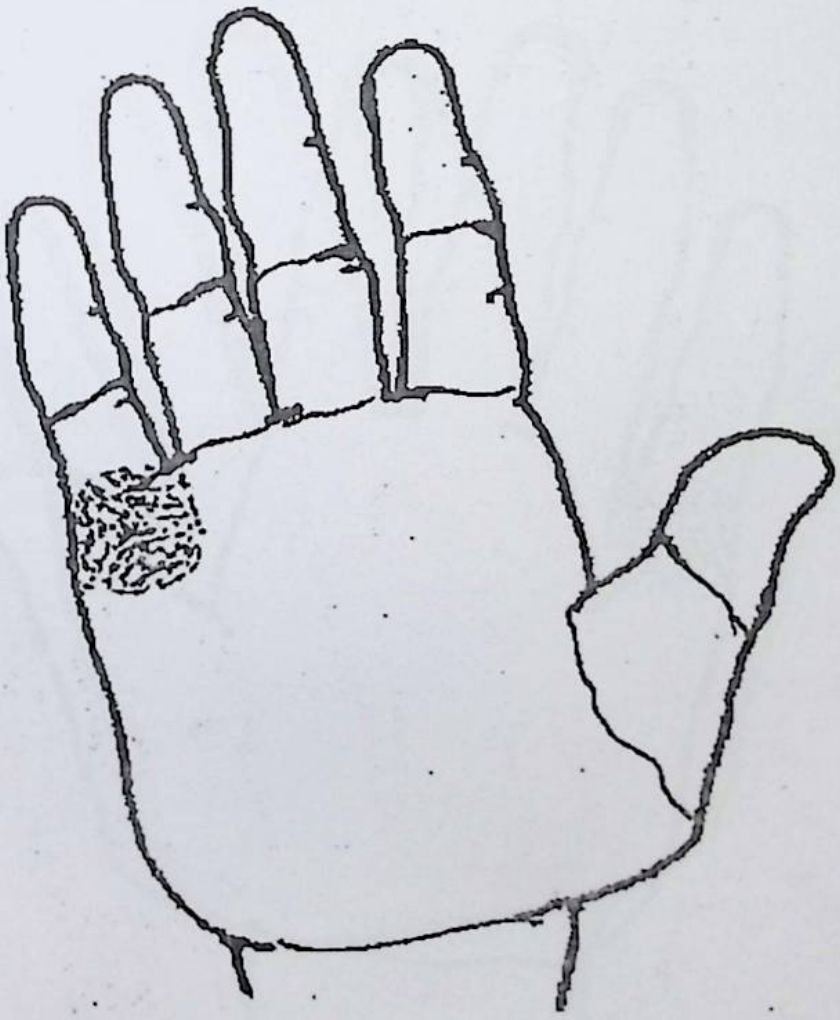

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सभी अंगुलियों के सिरे वर्गाकार हो तो जातक अध्ययनशील, तथा लेखन कार्य में प्रवीण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियां लंबी व चिकनी हो तो यह विश्लेषण शक्ति व स्फूर्ति को कम करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गांठदार होने पर बौद्धिकता में वृद्धि करती है।

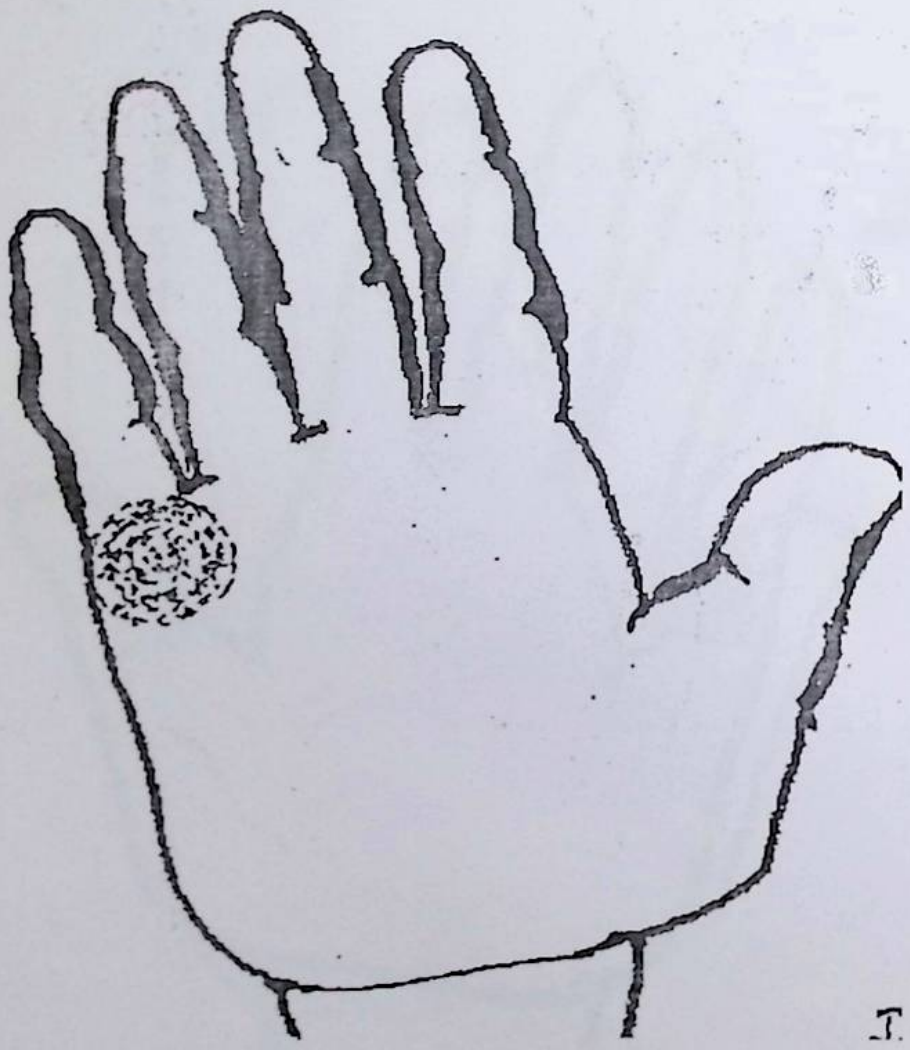

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. बुध क्षेत्र व हथेली का वर्ण

लचीली हथेली जातक के मस्तिष्क को परिष्कृत करती है जिससे जातक में व्यवहारिक बुद्धि व मानवीय संवेदनाएं बढ़ जाती है। जातक सभी को प्रिय हो जाता है। बुध प्रधान हथेली का रंग पीला हो तो रक्त अल्पता या यकृत का विकार दर्शाता है। गुलाबी हथेली शुभ होती है।

3. बुध क्षेत्र, चिन्ह व रेखाएं

बुध प्रधान हाथ पर यदि बुध के क्षेत्र पर दो या चार खड़ी रेखाएं हो तो जातक का रसायन व औषधि संग्रह से संबंध रहता है। जातक अच्छा चिकित्सक होता है।

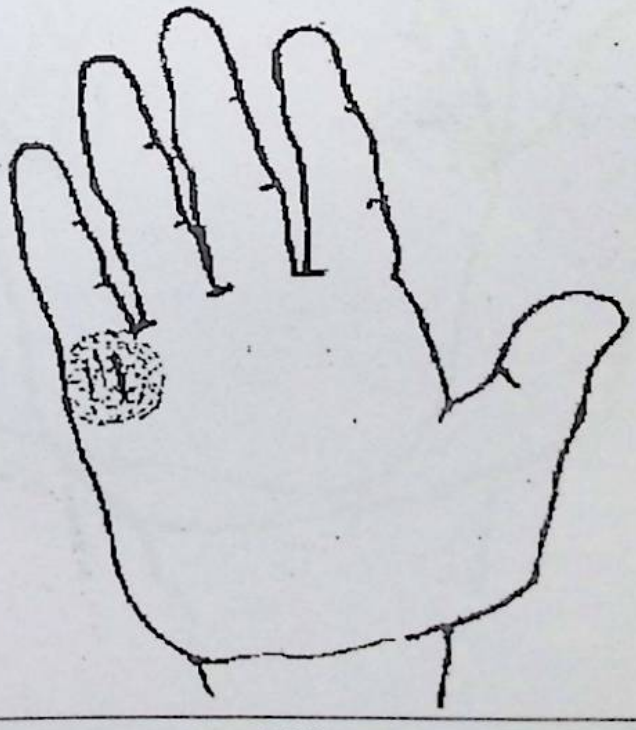

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध क्षेत्र पर जाली या क्रॉस बिंदु हो तो अशुभ हैं। इससे जातक बेईमान, चोर एवं अपराधिक पृष्ठभूमि वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि त्रिकोण या चतुर्भूज का चिन्ह हो तो यह शुभ व फलदायक है। जातक यशस्वी, उच्च प्रतिष्ठाधारी एवं देश विदेश में ख्याति प्राप्त करता है।

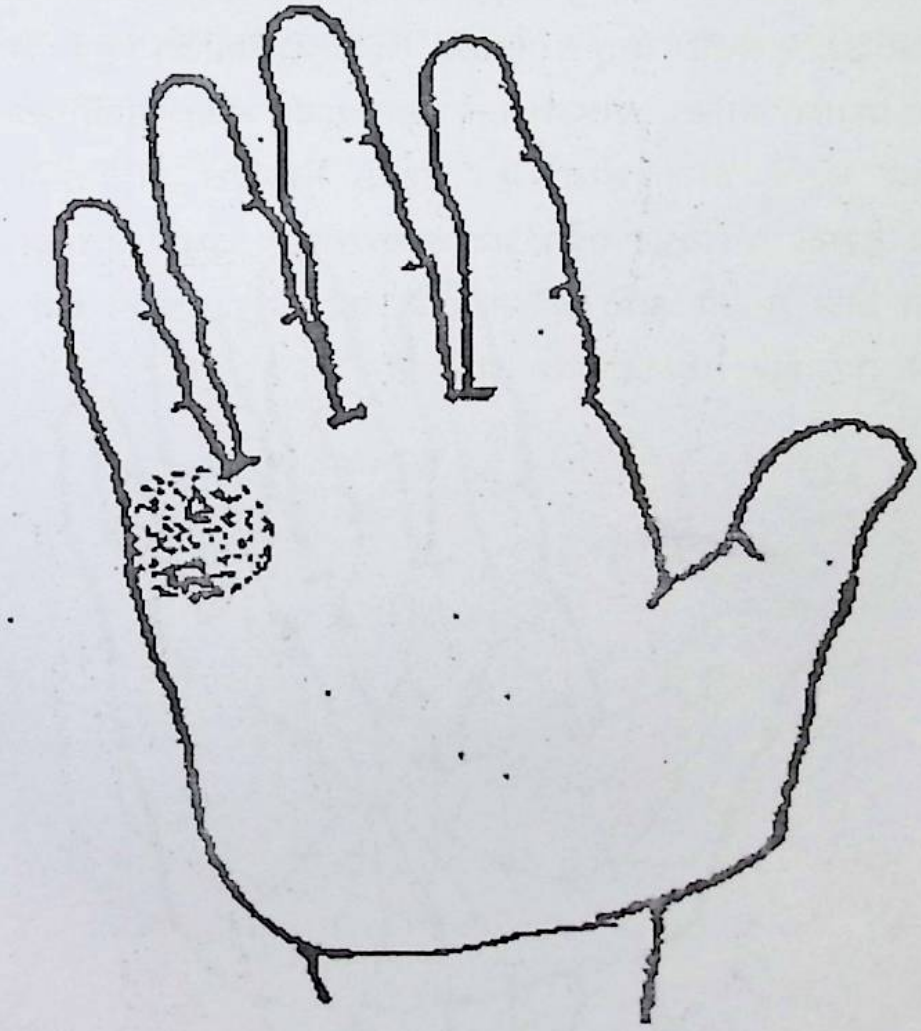

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्कर्ष :–

ज्योतिष में बुध क्षेत्र एक नपुंसक ग्रह माना गया है अर्थात् इसके भौतिकगुण दूसरे ग्रहों के साथ बदल जाते है। साथ ही इसकी प्रकृति पृथ्वी तत्व से गठित हुई है अतः बुध प्रधान व्यक्ति, सहनशील मितव्ययी तथा सभी को साथ लेकर चलने वाला होता है। इसके विपरित अविकसित बुध क्षेत्र इसके प्रतिकूल फल प्रदान करता है बुध पर्वत क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जो अविकसित होने पर अशुभ फल एवं उन्नत होने पर शुभ फलदायक होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल पर्वत क्षेत्र

हथेली का मध्य भाग जहां पर तंत्रिकाओं द्वारा समस्त अंगुलियों व अंगूठों की गतिविधियों का नियत्रंण होता है यह एक आधार स्थल है इसलिए इसका महत्व बढ़ जाता है। यह वह भाग है जो समस्त हथेली में क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिक फैला हुआ है।

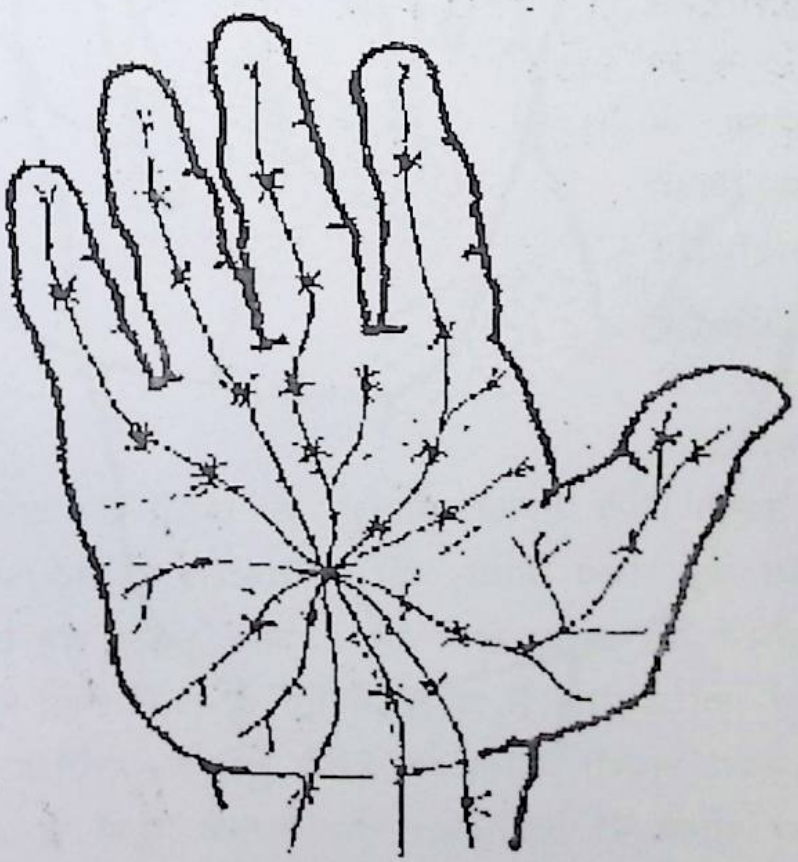

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके आधार पर ही तीनों प्रमुख रेखाएँ जैसे आयु रेखा, मस्तिष्क रेखा, व हृदय रेखा की उत्पत्ति अपने गुणों से समायोजित होकर जातक के गुणों व अवगुणों को प्रकट करती हैं।

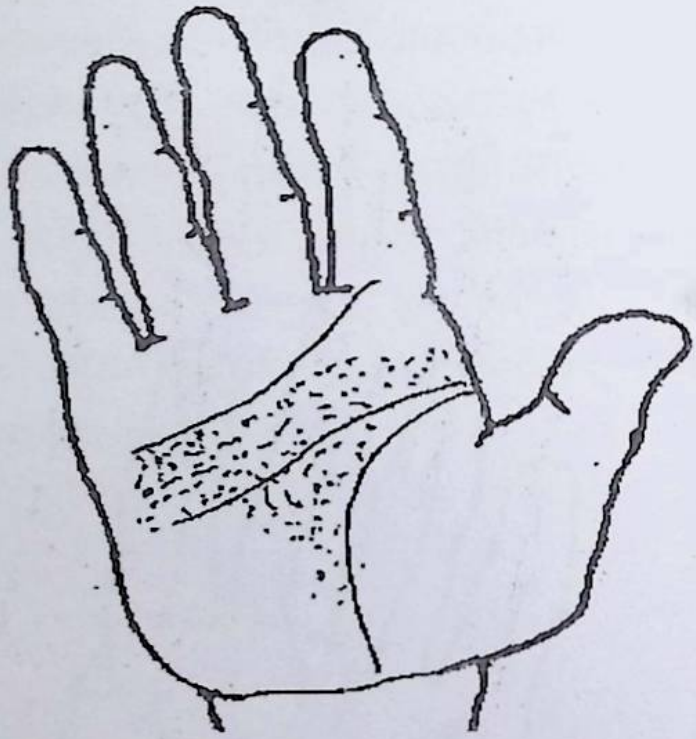

भारतीय जीवन में मंगल शब्द एक विशिष्ट स्थान रखता है। मंगल शब्द का अर्थ शुभाशीष अर्थात शुभ फल प्रदाय से है। जब किसी को आशीर्वाद दिया जाता है तब मंगल हो ऐसा कहा जाता है तथा उसके लिये मंगल कामना की जाती है। अतः मंगल क्षेत्र पर्वत का संबंध जीवन की विशिष्टता व सर्व भौमिकता से है। जैसा की अन्य क्षेत्रों के उद्गम स्थल पर अंगुलियां एवं अंगूठे का उद्गम है परंतु मंगल क्षेत्र में ऐसा कुछ नहीं है। यह स्वयं अपनी मौलिकता लिये हुये है। सुविधा के लिये इसे तीन भागों में विभाजित कर इसके गुणों व दोषों का वर्णन निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. गुरू व शुक्र पर्व के मध्य– निम्न या आक्रामक मंगल क्षेत्र

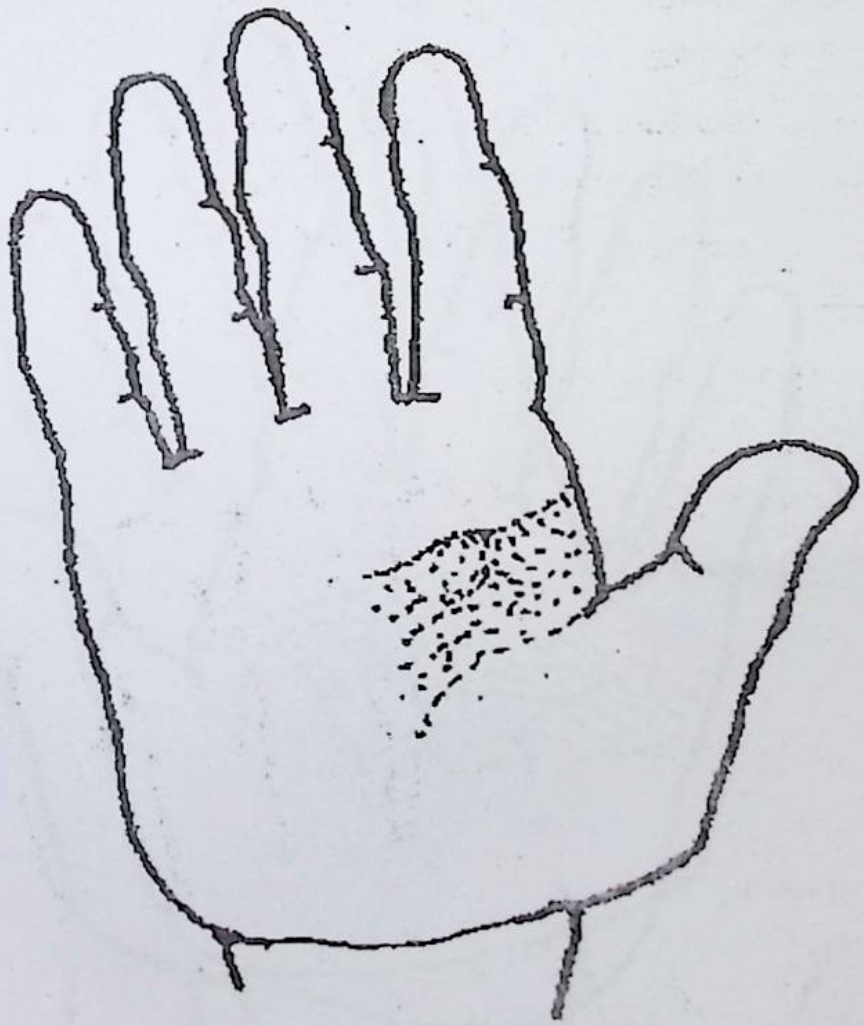

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. बुध व शुक्र पर्वत के मध्य – उच्च या रक्षात्मक मंगल क्षेत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स. हथेली के मध्य का क्षेत्र– मंगल का मैदान क्षेत्र

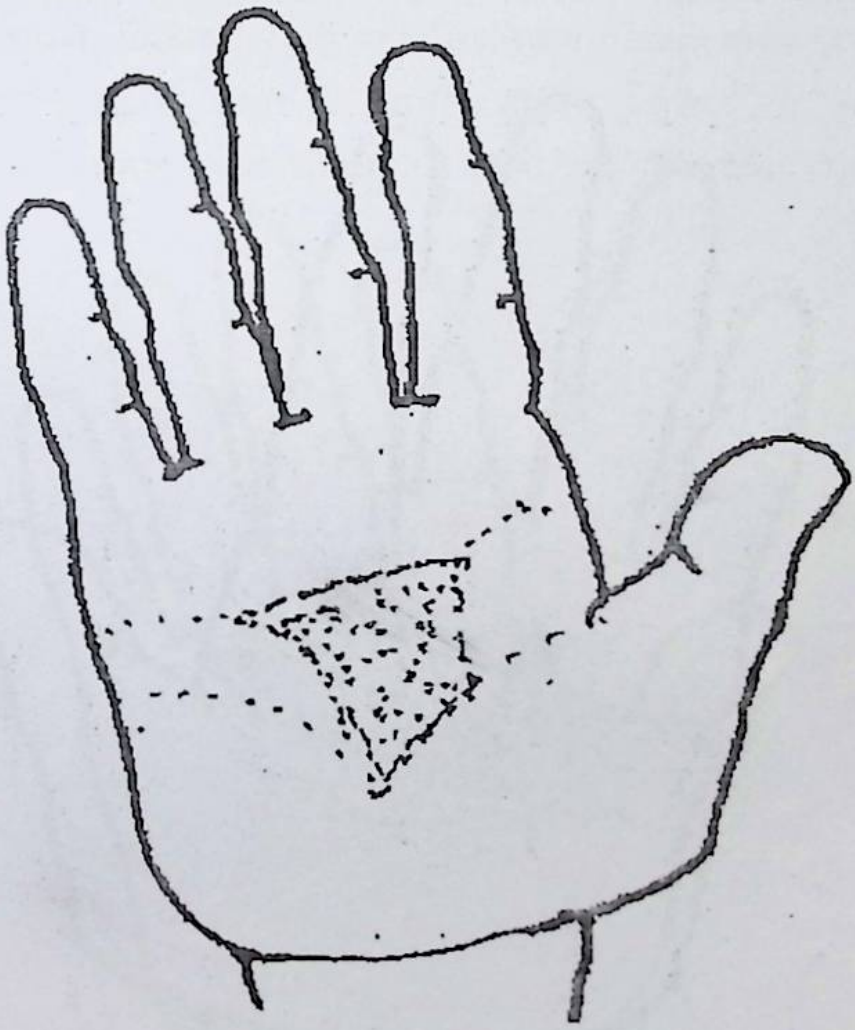

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. गुरू व शुक्र पर्व के मध्य–निम्न या आक्रामक मंगल क्षेत्र

प्राचीन काल में मंगल पर्वत क्षेत्र केवल मध्य भाग से ही संबंधीत रहता था व मंगल प्रधान माना जाता था।

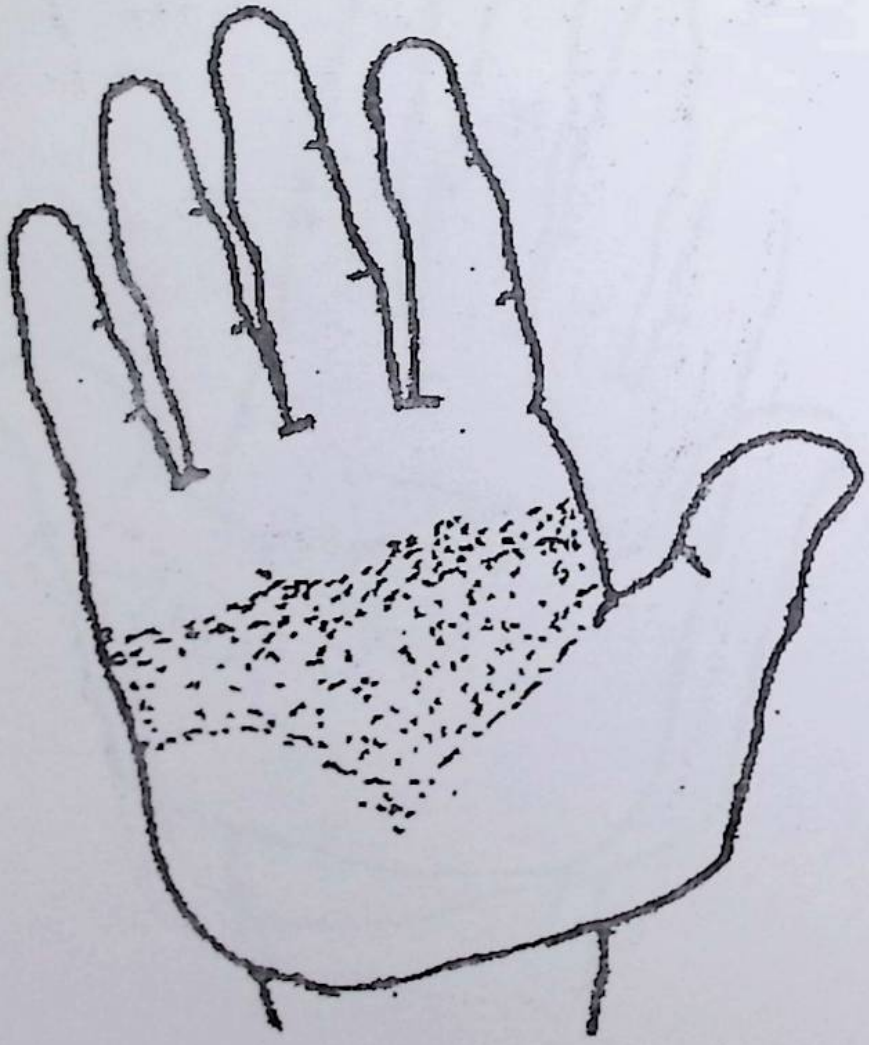

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल प्रधान जातक शक्तिशाली व शारीरिक बल से ही जाना जाता था। परंतु जब शुक्र पर्वत क्षेत्र का अध्ययन किया गया तब ऊपर क्षेत्र के गुणों को अव्यवस्थित पाया गया। तब एक विशिष्ट क्षेत्र की सर्वभौमिकता पाई गई व इसे निम्न या आक्रामक मंगल का स्थान दिया गया और इसके अपने विशिष्ट गुणों का विश्लेषण किया गया है। यह स्थान यदि उभरा हुआ व उन्नत हो तो जातक के स्वभाव में उग्रता. साहस तथा वीरता के गणों का समावेश होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन मौलिक गुणों की अधिकता से जातक निड़र होकर अपने कार्य में कभी पिछे नही रहता। उसके लिये उसका लक्ष्य मुख्य होता है। उसके फल की उसे चिंता नही रहती हैं। हर्ष या विषाद उनके लिये कोई विशेष मायने नहीं रखता है। आक्रामक मंगल प्रधान जातक खेल कूद, सेना या प्रशासनिक सेवाओं में जाते हैं।

मंगल क्षेत्र अपनी मौलिकता लिये होता है। परंतु अन्य पर्वत क्षेत्र, अंगुलियां व अंगूठे की बनावट के साथ इसके गुणों में वृद्धि या कमी आती है। ये प्रभाव निम्न हैं।

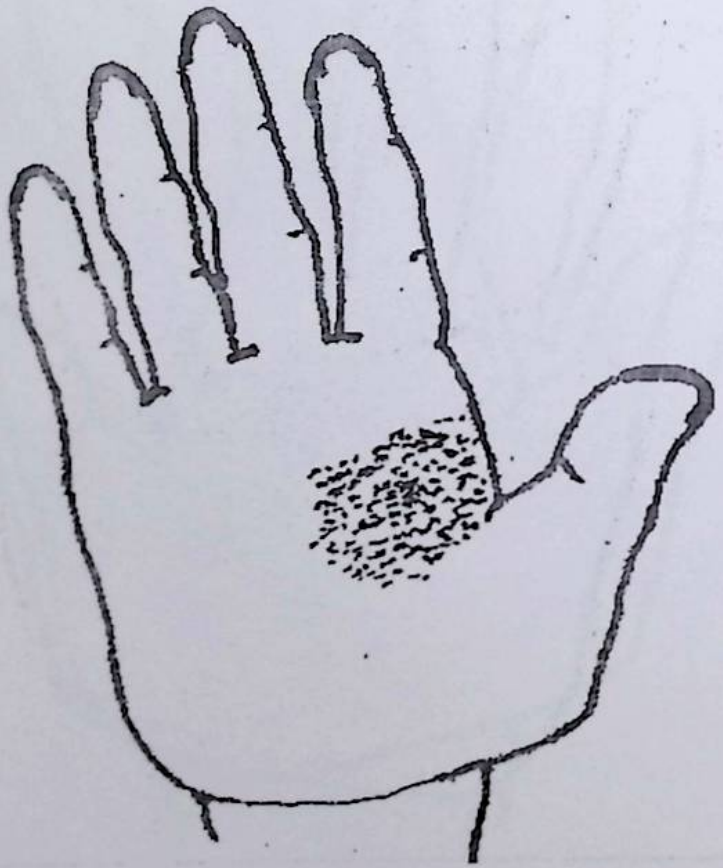

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. निम्न या आक्रामक मंगल व अंगुलियों की बनावट

आक्रामक मंगल उन्नत व व्यक्ति के अंगुलियों के नाखून छोटे हो तो जातक उत्तेजित व शीघ्र आवेश में आने वाला तथा क्रोधी स्वभाव का रहता है।

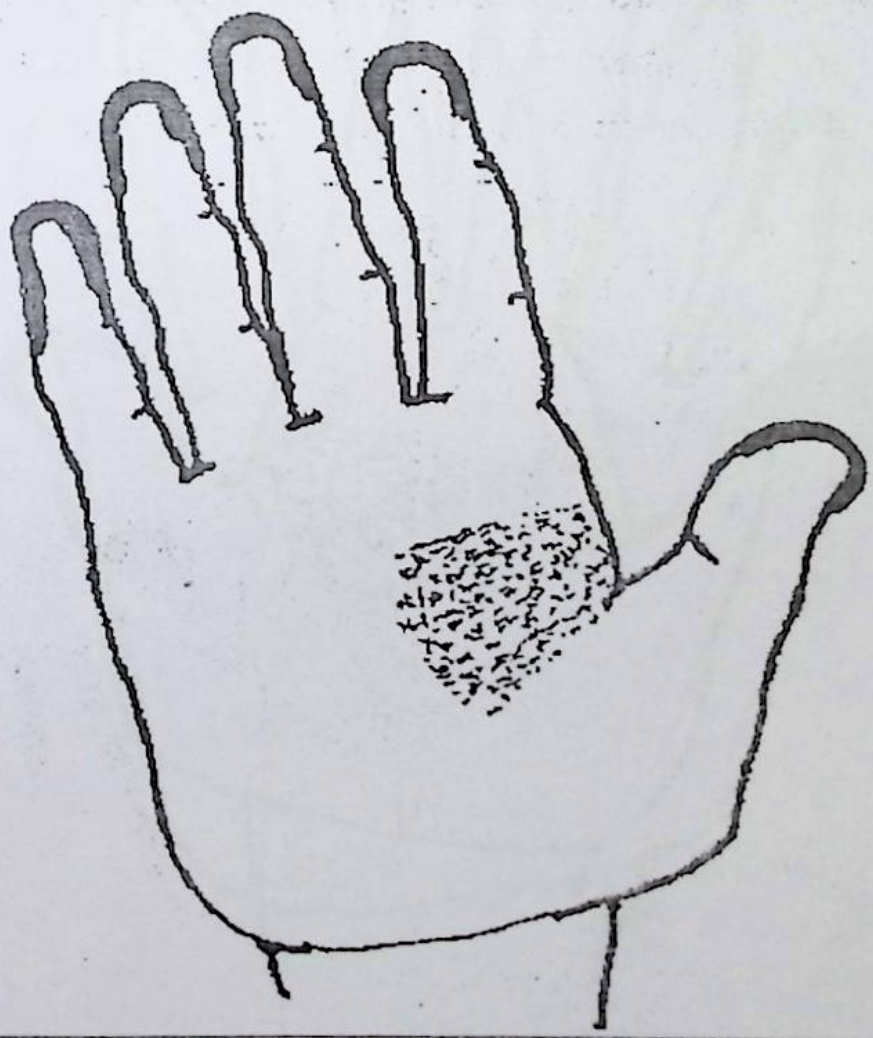

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियां चौकोर व साधारण लंबाई लिये हो तो जातक आवेश को नियत्रंण रखने की क्षमता रखता है।

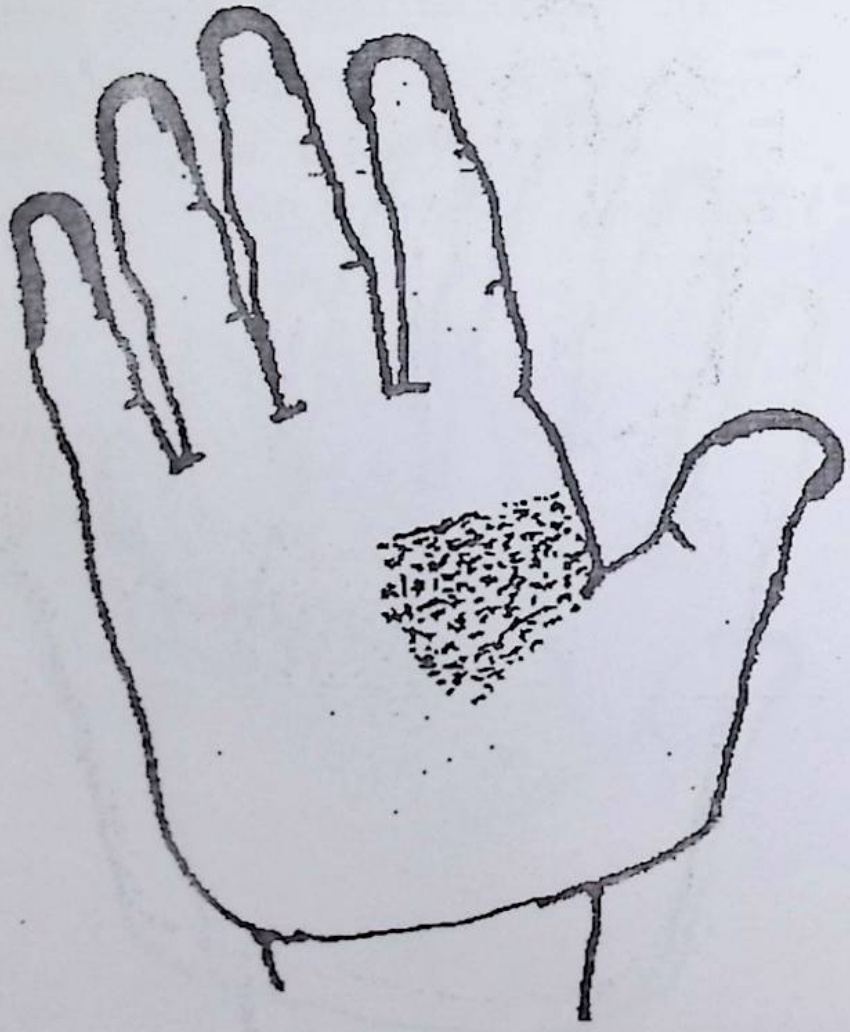

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंबा अंगूठा सम भाव बनाता है। जातक कुछ खास मुद्दों पर ही आक्रोश करता है व अनुशासित रहता है।

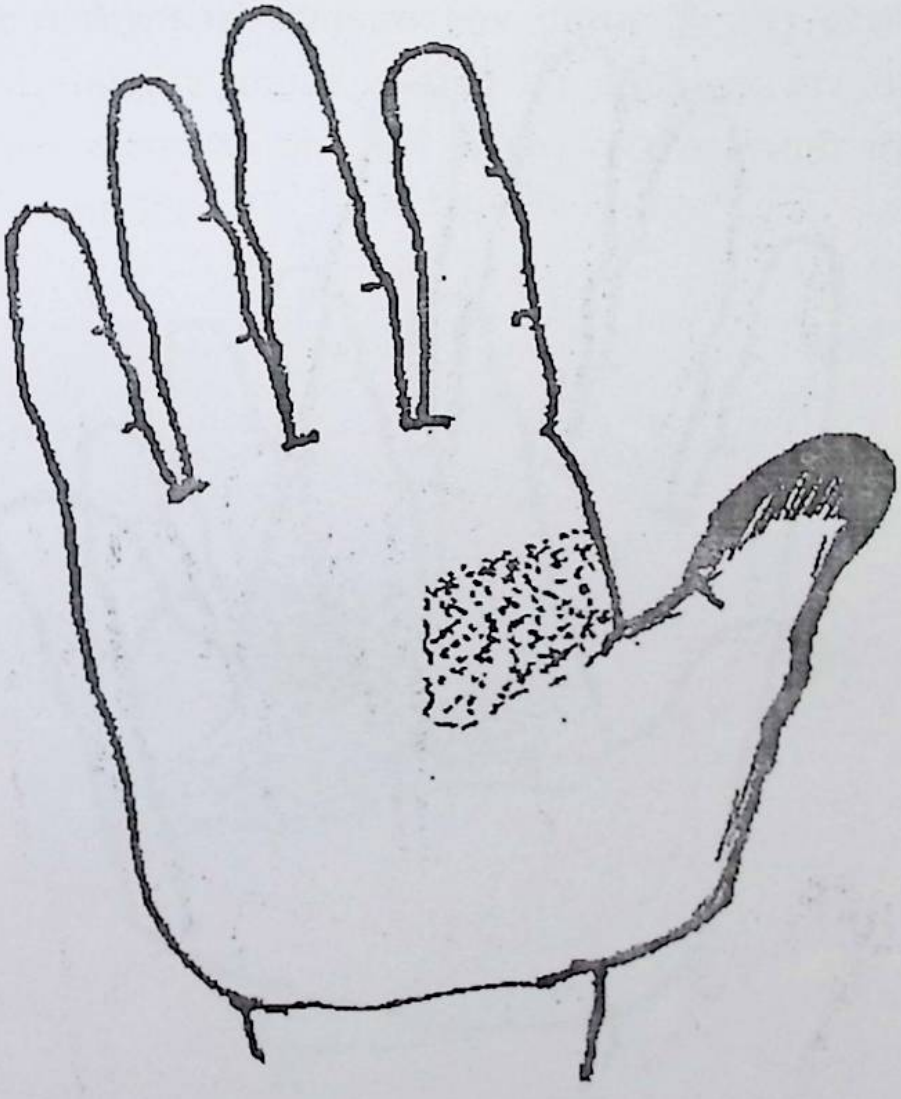

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि अंगूठा छोटा व नाखून छोटे हो तो जातक तानाशाह व अपराधिक प्रवृत्ति का होता है। प्रायः जातक किसी गिरोह का मुखियां होता हैं। तुरंत लड़ाई या झगड़ें पर उतरना इसकी प्रवृत्ति होती हैं।

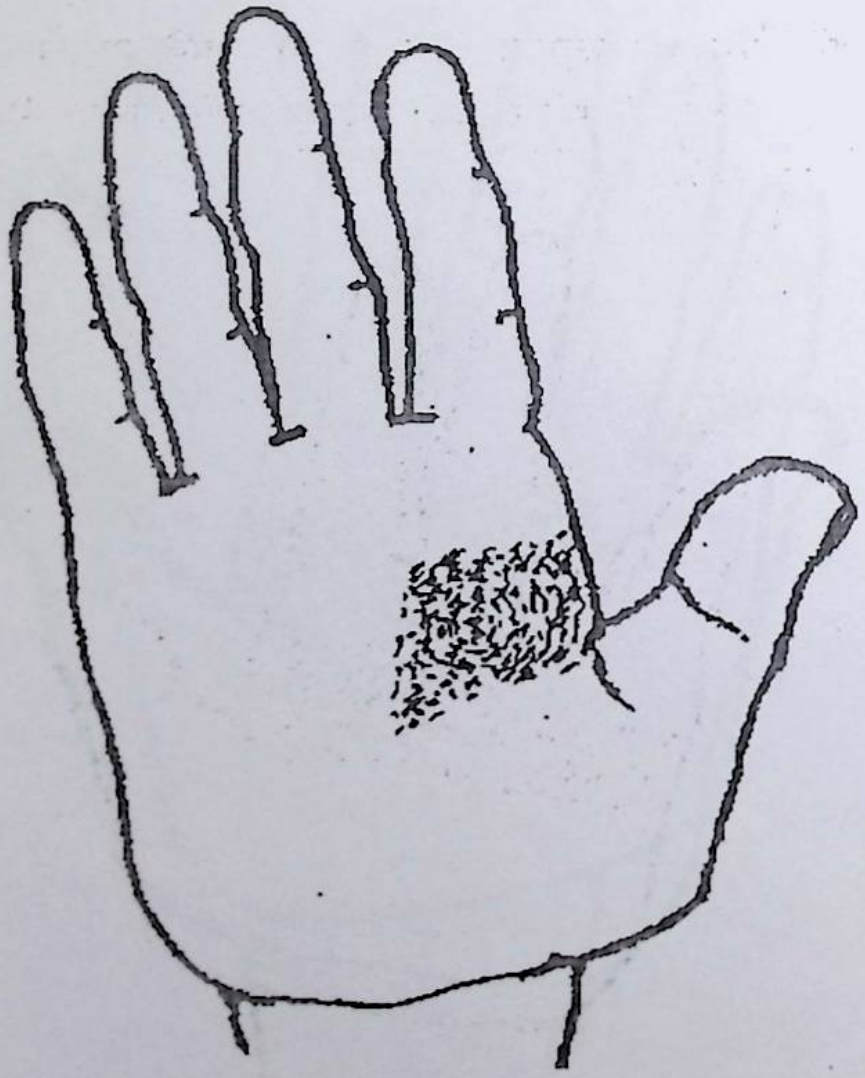

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. निम्न या आक्रामक मंगल व अन्य पर्वत क्षेत्रों के साथ संबंध

प्रायः मंगल क्षेत्र साहस, वीरता व कर्मठता के गुण लिये रहता है। इसके साथ यदि सूर्य पर्वत भी विकसित हो तब जातक पराक्रमी व उच्च आकांक्षी होता है व आत्मबल से उच्चपद व नेतृत्व की पराकाष्ठा तक पहुंचता हैं परंतु क्रोध पर नियंत्रण नही कर सकता व सभी को अपने अनुसार चलने पर विवश करता है। जो आगे चलकर उसे तानाशाही प्रवृत्ति प्रदान करता है।

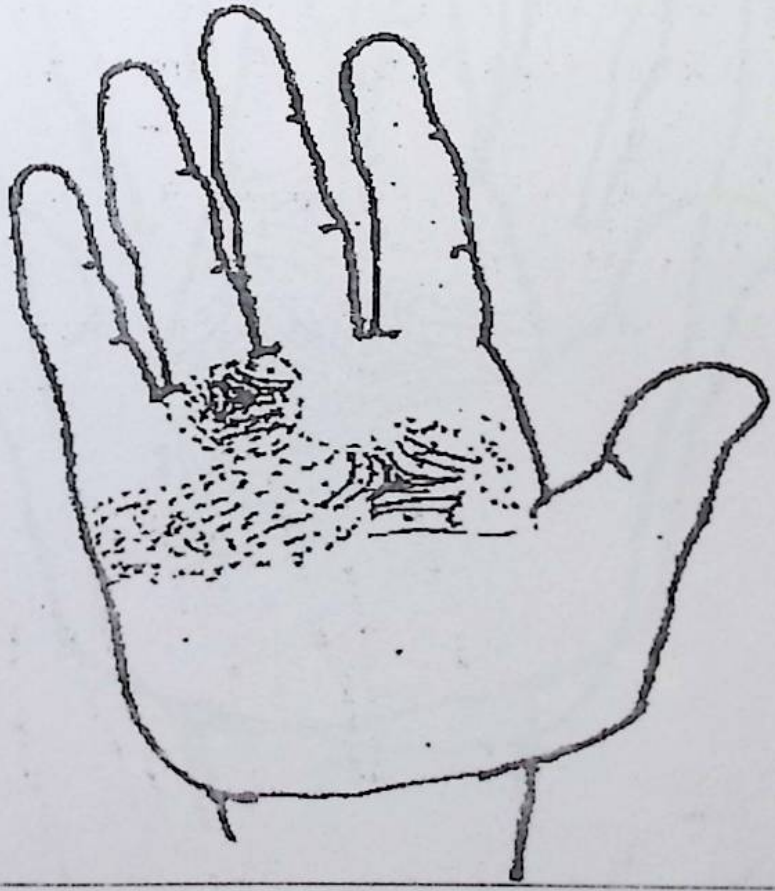

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि गुरू पर्वत क्षेत्र भी उन्नत हो तो यह जातक को धर्मावलंबी बनाता हैं। ये आस्थावान हो धर्म के संरक्षक बन जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि चंद्र पर्वत उन्नत हो तो जातक कलात्मक रूचि भी रखता है। परंतु रचनाओं व व्यवहार में युद्ध या शिकार या उत्तेजना प्रधान सौंदर्य बोध ही रखते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि के उन्नत क्षेत्र से छद्म् विद्याओं एवं व्यूह रचना कार्य को सम्पन्न करने की नयी विद्याओं की रचना करने में जातक समर्थ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र के साथ इसकी युक्ति काम भाव बढ़ाती है। व्यक्ति खुश–मिजाज व मन मौजी होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. निम्न या आक्रामक मंगल व चिन्ह/ रंग

प्रायः मंगल प्रधान हथेली का वर्ण लाल रहता है साथ ही हथेली मोटाई लिये रहती है जो कि क्रोधी प्रवृत्ति की द्योतक है। गुलाबी रंग गुणों में विशिषताएं लाता है। सफेद रंग मंगल प्रधान हाथ में होता ही नहीं हैं।

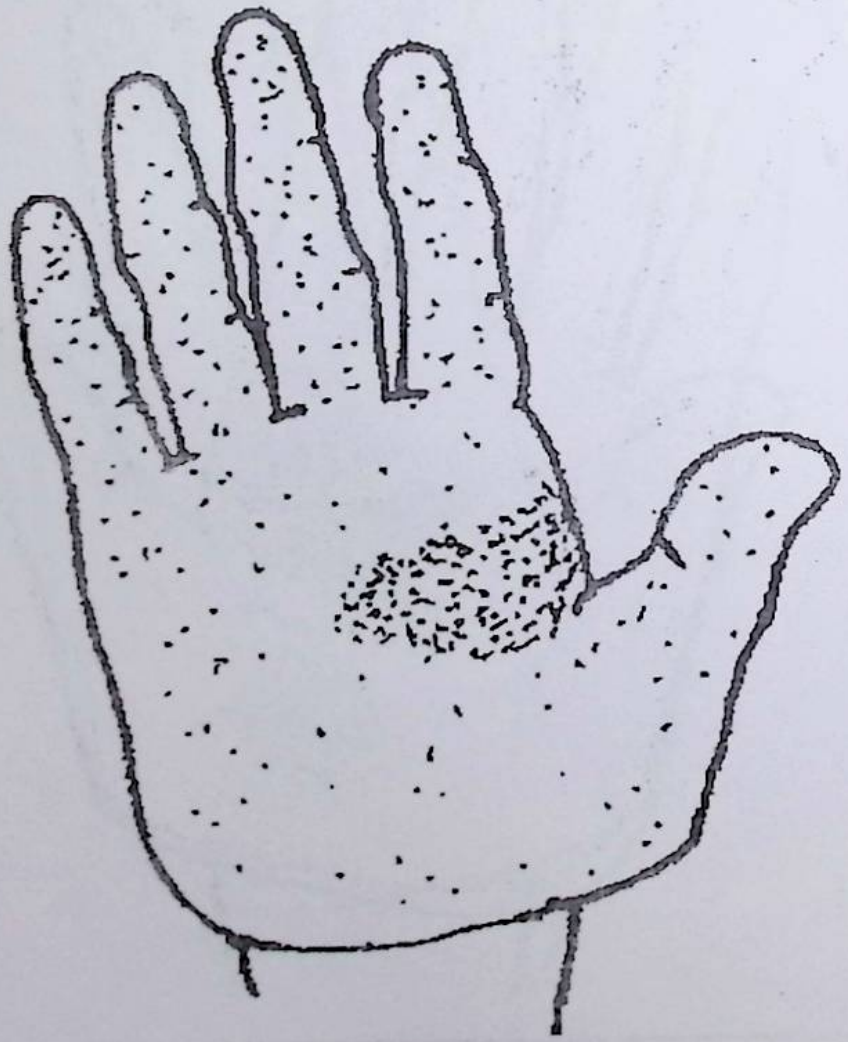

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल पर्वत पर सितारा, त्रिकोण, घेरा या सीधी रेखा मंगल पर्वत के ऊपर के उस क्षेत्र को दृढ़ता प्रदान करता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आड़ी रेखा, द्वीप, बिंदु या जाली जातक के गुणों को कम कर अशुभ कारक बनाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. अविकसित आक्रामक मंगल या निम्न क्षेत्र

मंगल क्षेत्र अपनी मौलिकता लिये मुख्य गुणों का धारक है। यदि यह अविकसित रहेगा तो जातक शारीरिक रूप से निर्बल होगा।

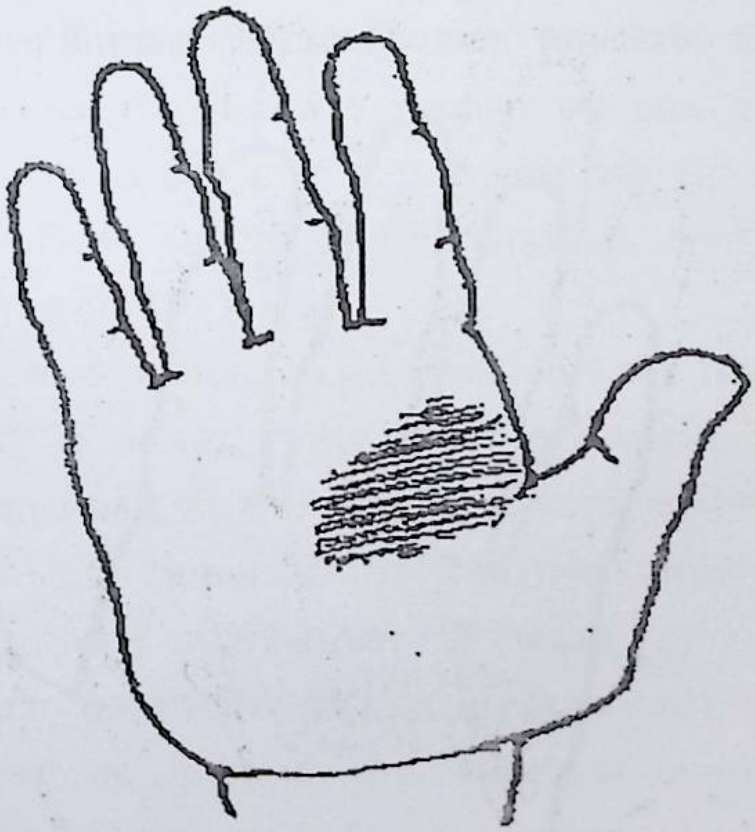

उसके शरीर में रक्त संचार की कमी रहेगी एवं उसे कायर बनायेगी। किसी भी जोखिम भरे कार्य को करने से जातक डरेगा। कोई भी व्यक्ति ऐसे जातक को अपने दबाव में ले सकता है। जातक साधारण जीवन व्यतीत कर जीवन में निराशा का भाव ही उत्पन्न करेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. बुध व चंद्र पर्वत के मध्य, उच्च या रक्षात्मक मंगल

मस्तिष्क रेखा के ऊपर का क्षेत्र जो बुध व चंद्र पर्वत के मध्य स्थित है इसे उच्च मंगल कहते है। क्योंकि निम्न मंगल अपने आक्रामक भाव को जनित करता हैं।

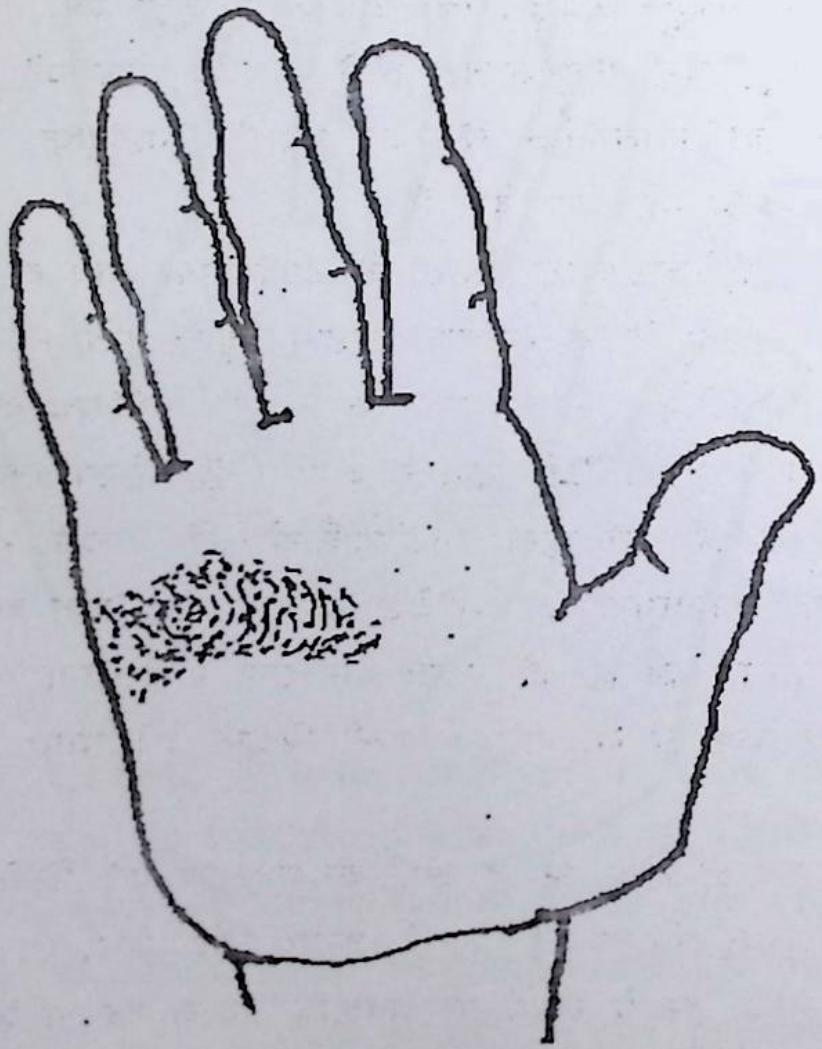

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके ठीक विपरित जातक की रक्षात्मक भाव की उत्पत्ति यही क्षेत्र उत्पन्न करता है।

यह पर्वत क्षेत्र अपनी विविध विशिष्टता लिये है। क्योंकि एक ओर चंद्र क्षेत्र की शीतलता और दूसरी ओर बुध की उष्णता विद्यमान हैं। अतः जातक के गुणों में दोनों की सम भावना विद्यमान रहती है। जिस प्रकार मंगल अपनी उग्रता, निड़रता व उत्तेजना का भाव रखता है परंतु यह क्षेत्र उन्नत होने से चंद्र क्षेत्र की धीरता व बुद्ध की मानसिक स्थिरता इसके साहसिक गुणों की विशिष्टता को बढ़ा देते है।

इसी कारण से मंगल के आक्रामक भाव को नियंत्रण प्राप्त होता है व जातक साहस, बुद्धि एवं धीरता तीनों अच्छे गुणों का स्वामी हो एक अद्‌भूत व्यक्तित्व का निर्माण करता है। जो उसे सफल बनाता हैं। ऐसा जातक चाहे कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियों में जन्मा हो अथवा उसके आसपास का परिवेश कितना ही निम्न क्यों न हो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर एक सफलतम व्यापारिक, अध्ययनशील या नेतृत्व वाली स्थिति को प्राप्त कर लेता हैं।

मंगल क्षेत्र अपने मौलिक स्वभाव को लिये है परंतु रक्षात्मक मंगल, अंगुलियों, अन्य पर्वत क्षेत्र, त्वचा के वर्ण के साथ इसके गुणों मे बदलाव प्रदान करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये प्रभाव निम्न है :-

1. रक्षात्मक मंगल व अंगुलियों व अंगूठे की बनावट

रक्षात्मक मंगल के दो पर्वत क्षेत्र के मध्य स्थित होने से इस क्षेत्र के उन्नत होने पर अंगुलियों की बनावट इसके गुणों में चार चांद लगा देती है। छोटी व कठोर अंगुलियों से कार्य करने की सूक्ष्मता, बारिक व धैर्य पूर्ण कार्य, जैसे बुनाई, हस्त दस्तकारी वाले कार्यो में जातक को सफलता देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंबी अंगुलियों से सृजनात्मकार्यें, एक अच्छा सर्जन या चित्रकारी में जातक को सफलता देता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों के सिरे नूकिले व नाखून की बनावट नुकीली होने पर यह जातक में दार्शनिक भाव की उत्पत्ति होती है। धर्म के प्रति उसका आकर्षण इतना बढ़ जाता है कि उसके लिये वह सब कुछ त्याग कर सकते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. रक्षात्मक मंगल व अन्य पर्वत क्षेत्रों से संबंध

रक्षात्मक मंगल का मुख्य गुण धैर्य पूर्ण वैचारिक शक्ति है जो जातक में प्रतिकार या विवेकपूर्ण कार्यों में युक्ति प्रदान करता है। इन गुणों में अन्य पर्वत क्षेत्र, सूर्य के उन्नत होने पर पराक्रम व कार्यशीलता में धैर्य होता हैं।

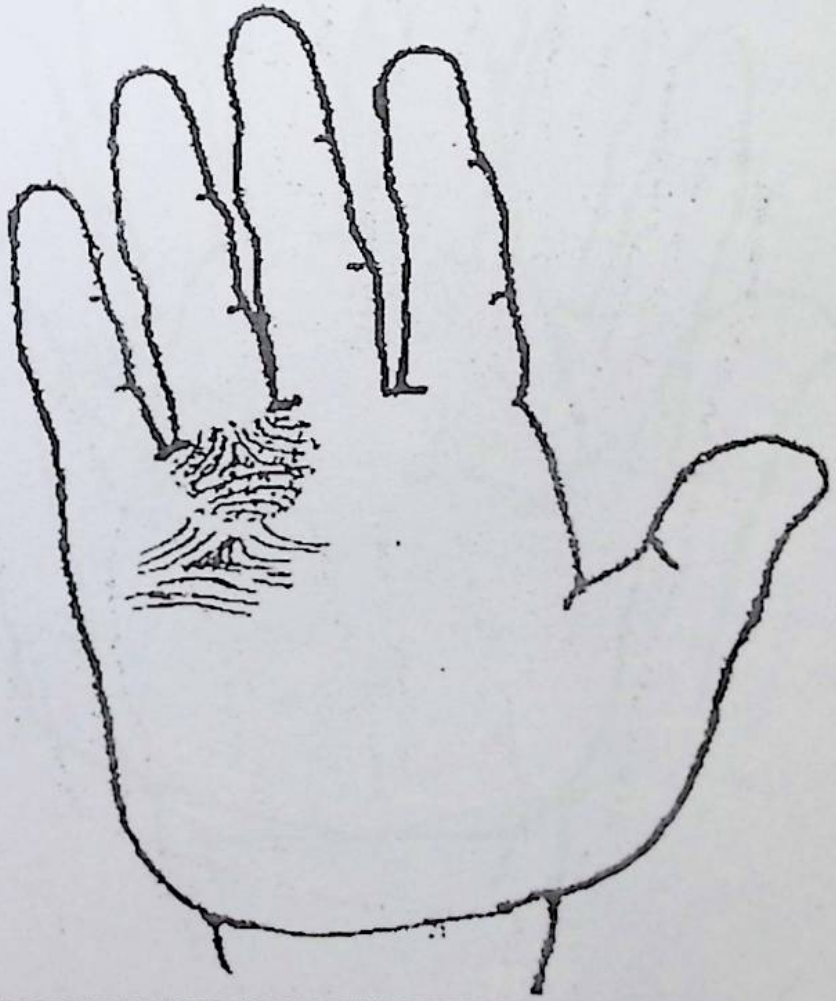

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू के साथ, सात्विक गुणों में वृद्धि प्रदान करता हैं।

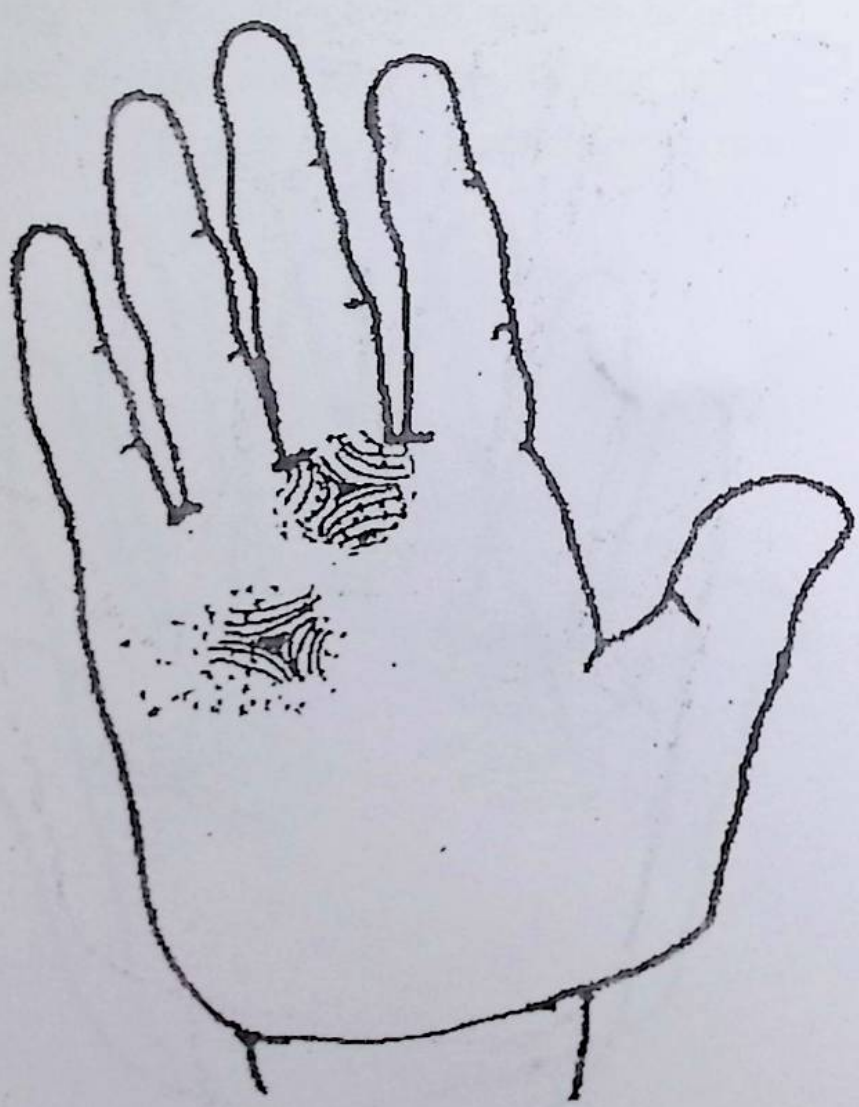

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत के साथ अन्वेषण में धीरज व लग्नशीलता तथा बुध के साथ व्यापार में धैर्य प्रदान करता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनके विपरित अन्य ग्रहों के अविकसित होने पर उनके गुणों का अभाव रहेगा।

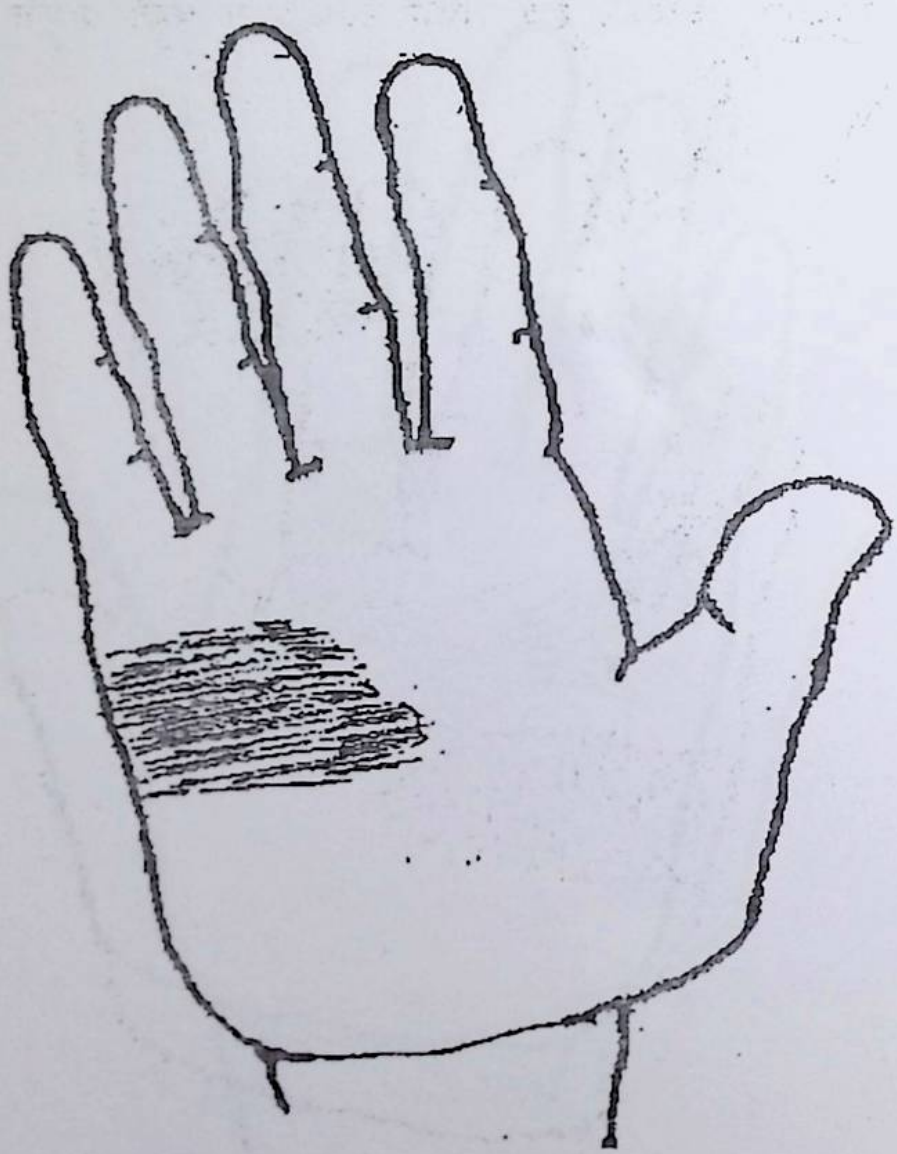

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. रक्षात्मक मंगल चिन्ह व वर्ण

मंगल का सदैव लाल वर्ण ही रहता है। गुलाबी होने से उग्रता व उत्तेजना में सम भाव उत्पन्न करता है। इस स्थान पर त्रिकोण, चोकोर एवं सीधी रेखा शुभ फल प्रदान करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिंदु, द्विप एवं जाली अशुभ माना गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. अविकसित रक्षात्मक मंगल

अविकसित मंगल क्षेत्र शारीरिक दुर्बलता प्रदान करता है। रक्षात्मक मंगल क्षेत्र अविकसित या धंसा हुआ होने पर जातक में प्रतिरोध की क्षमता खत्म हो जाती है।

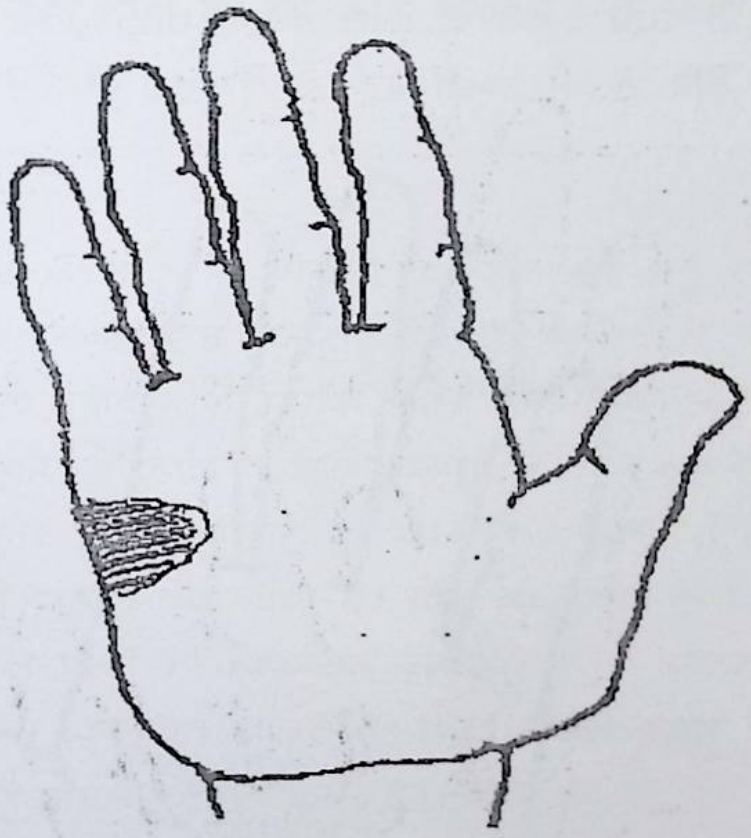

जातक कार्य करने के पहले ही निराश हो जाता है या किसी का विरोध नहीं कर सकता। प्रायः ऐसे जातकों का शोषण ही होता है। इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है। जीवन में इन्हें निराशा ही रहती है अतः अविकसित मंगल सही मायने में अमंगलकारी रह जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. हथेली के मध्य का क्षेत्र, मंगल का मैदान

हथेली के मध्य वाला भाग प्रायः यह भाग अन्य ग्रहों के पर्वतों से घिरा होने से थोड़ा दबा ही रहता हैं अतः इसकी स्थिति सही देखने के लिये हथेली थोड़ी ढ़ीली छोड़कर देखने पर यदि हल्की उभरी हुई हो तो इसे उन्नत मानते है।

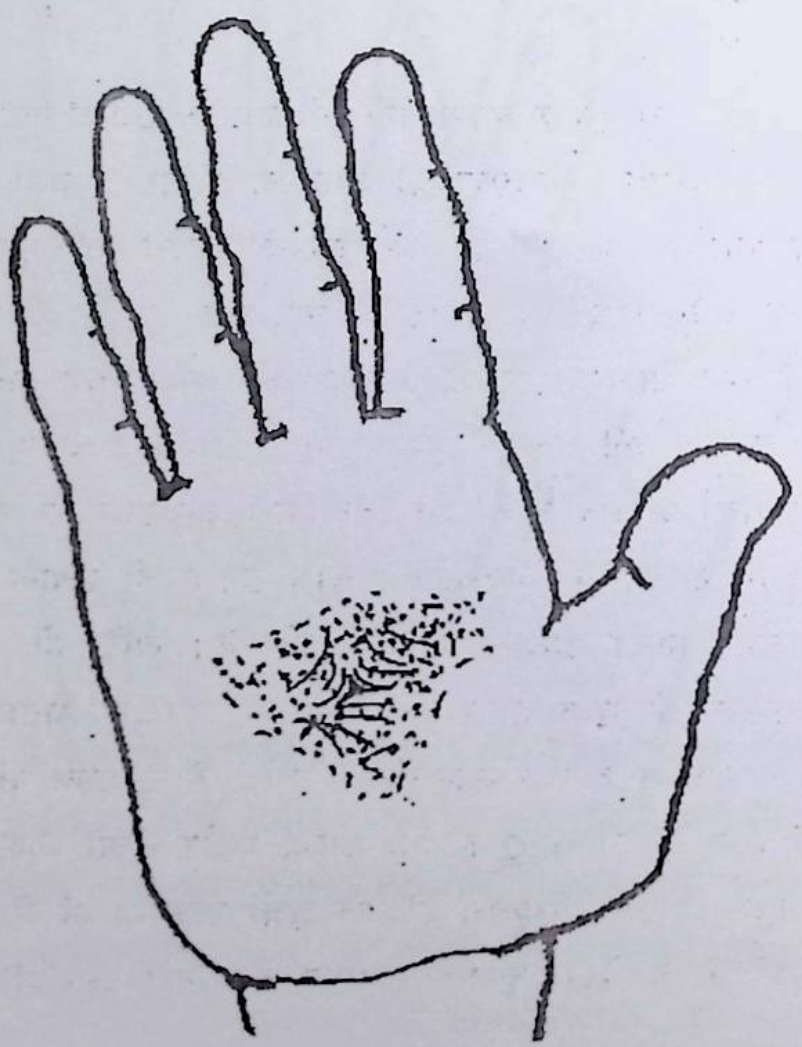

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसे जातक शारीरिक बल वाले होते है तथा उनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है। मंगल प्रधान हथेली में रक्त संचार तेजी से होता है अतः जातक साहसी, निड़र एवं कर्मठ होता है। आर्थिक रूप से धन उपार्जन की क्षमता जातक में अन्य व्यक्तियों से ज्यादा होती है। जो आगे चलकर धन संचय की प्रवृत्ति को बढ़ाती हैं।

निष्कर्ष

भारतीय हस्त शास्त्र में मंगल के स्थान को शत्रु स्थान कहा है क्योंकि मनुष्य के साहस, निड़रता व धैर्य ये तीनों गुण जातक के जीवन में उसके कर्मो के साथ मिलकर उसके जीवन को खुशहाल व सुखी बनाते है और इन तीनों गुणों का अभाव उसके जीवन को व्यर्थ कर देता है। अतः मंगल क्षेत्र की महत्ता बढ़ जाती है। यदि आक्रामक मंगल व रक्षात्मक मंगल दोनों ही विकसित अवस्था में व उन्नत हो तो उसे सामान्य विकसित मानते है। तीनों स्थान उभार लिये हो तो मंगल प्रधान माने जाते है। यदि दो में से एक विकसित तो एक दूसरे के गुणों को पूरकता प्रदान करते है। मंगल प्रधान व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से समाज में कोई कार्य नहीं कर पाते। परंतु इसके अन्य पर्वत क्षेत्रों जैसे गुरू, सूर्य या बुध के साथ उन्नत स्थिति इन्हें समाज में विशिष्ट स्थान दिलाते है व ऐसे जातक समाज के लिये कार्यशील रहते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र पर्वत क्षेत्र

कलाई के ऊपर, मणिबंध के ऊपर हथेली के आखरी छोर पर शुक्र पर्वत क्षेत्र के सामने का मंगल क्षेत्र के नीचे वाला समस्त विस्तृत क्षेत्र चंद्र पर्वत क्षेत्र कहलाता है।

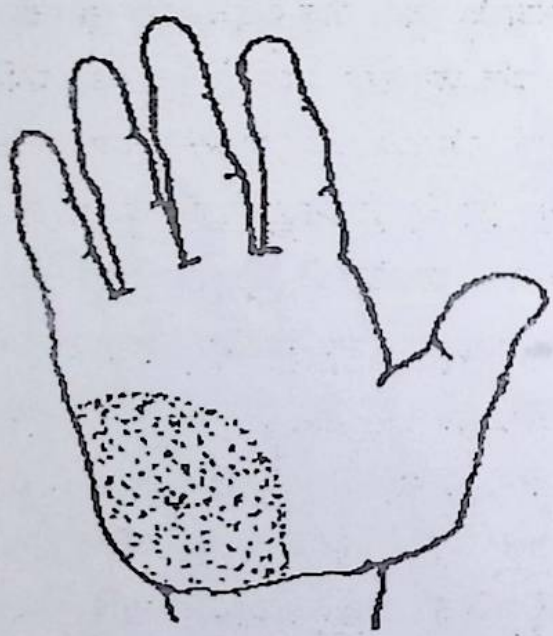

इस चराचर में पृथ्वी के सबसे नजदीक का ग्रह चंद्र ग्रह है। यह ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। सूर्य के तेज से स्वयं चंद्र उर्जावान है। चंद्रमा पृथ्वी पर प्राणियों को शीतलता प्रदान करता है। ज्योतिष शास्त्र में इसे श्वेत वर्ण, स्त्री जाति व कफ प्रकृति का माना जाता है। यह जब पृथ्वी के निकट होता है तो समुद्र में ज्वारभाटा आते है। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर लिया है की मनुष्य के शरीर में भी जल की अधिकता है। चंद्रमा मनुष्य के मन को व बुद्धि को प्रभावित करता है। अर्थात चंद्र की अपनी मौलिकता व गुण चंद्र पर्वत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षैत्र के विकसित या अविकसित होने से प्रभावित होते है। क्योंकि मन चेतन व अवचेतन मन में विभक्त है तथा मनुष्य के व्यक्तिगत गुणों को प्रभावित करता है। चंद्र की स्थिति मनुष्य के व्यक्तिगत गुणों को प्रभावित करती है। चंद्र की स्थिति मनुष्य के जन्म के समय के साथ मिलकर उसकी जन्म पत्रिका एवं ग्रहों के साथ फलित होकर उस जातक की पूर्ण जीवन की कुंड़ली बन जाती है अतः चंद्र पर्वत का क्षेत्र काफी विशिष्ठताओं वाला है। इसे भी तीन प्रभागों में बांटा गया हैं।

1. उच्च चंद्र क्षेत्र, 2. मध्य चंद्र क्षेत्र, 3. निम्न चंद्र क्षेत्र

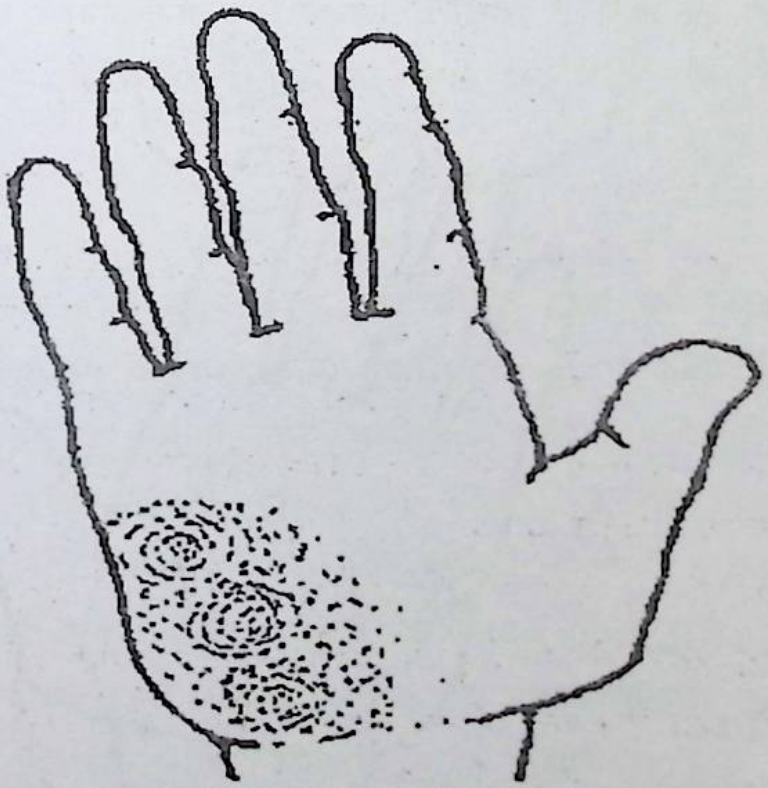

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. उच्च चंद्र क्षेत्र

चंद्र का प्रभाव मन और बुद्धि अर्थात् चित्र वृत्तियों को प्रभावित करता है। कल्पना का बुद्धि में एक विशेष स्थान है। जब मनुष्य निद्रा में होता है तब उसकी बुद्धि जाग्रत रहती है। परंतु वह मनुष्य के भौतिक भाव से दूर रहती है। यह अवस्था अर्ध चेतन कहलाती है। इस अर्ध चेतन भाव की अभिव्यक्ति उच्च चंद्र क्षैत्र करता है। ऊपरी सिरा या उच्च चंद्र क्षेत्र उभार लिये हो तो जातक मन की आंखों से सामने वाले व्यक्ति के भाव पढ़ सकता है। वह एक अच्छा रचनाकार हो सकता है। वह ऐसी बातें या रचना कर सकता है जिसे उसने कभी भी देखा ही नहीं है अर्थात उसका आन्तरिक मन जाग्रत रहता है एवं वह अतिन्द्रिय ज्ञान का ज्ञाता रहता हैं।

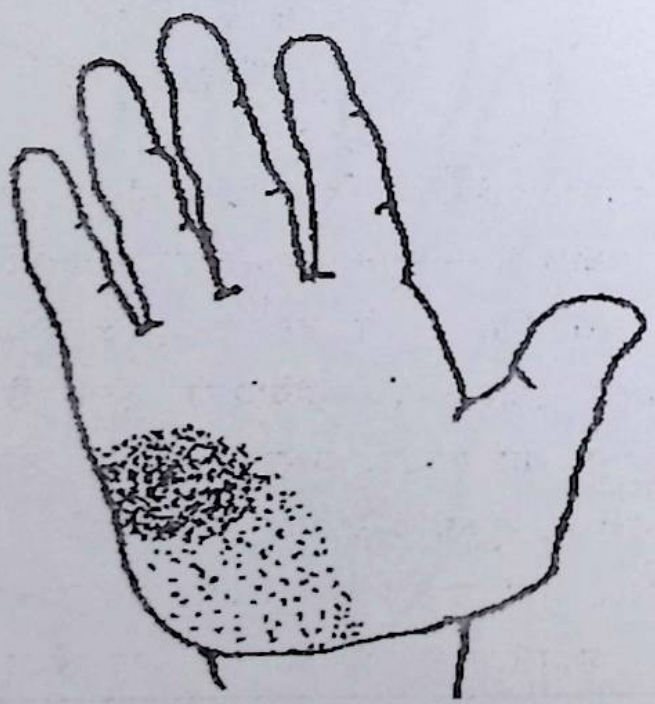

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. मध्यम चंद्र क्षेत्र

शुक्र पर्वत के सामने अंगूठे के विपरित वाला स्थान मध्य चंद्र क्षेत्र कहलाता हैं।

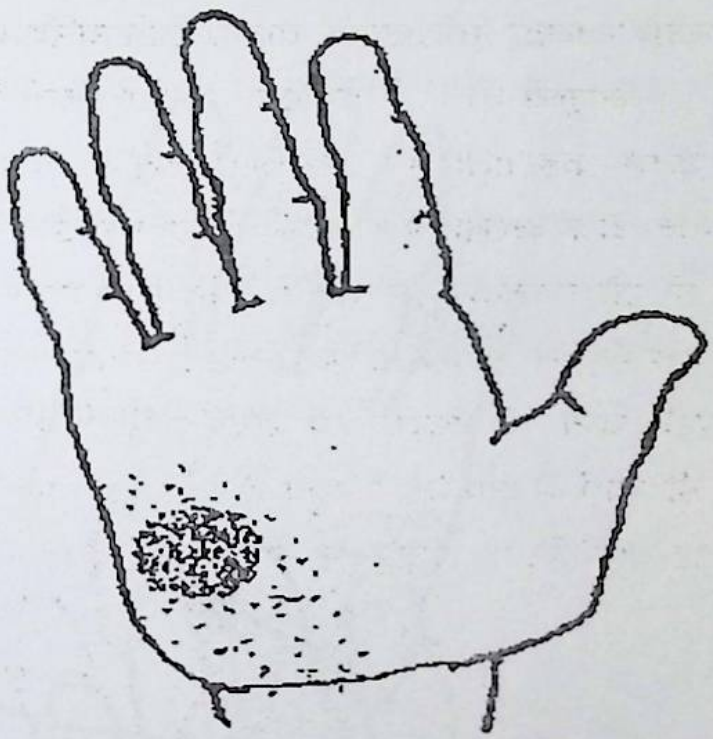

यह भौतिक क्षेत्र व मन के वास्तविक भाव की जागृति से संबंध रखता है। जातक कल्पनाशक्ति व सौंदर्य प्रेमी होता है। वह व्यवहारिक गुणों का धनी, लोकप्रिय, चित्रकला, संगीत कला एवं सौंदर्य दृष्टिवाला होता है। वह अपनी कल्पना शक्ति को साकार करने में समर्थ होता है। उसकी कार्य प्रणाली में सूक्ष्म दृष्टि प्रकृत्ति प्रेम सदैव दिखता है। ऐसे जातक स्थिर नही रहते। इन्हें भ्रमण एवं यात्रा करना अच्छा लगता है। नवीनता इनका भौतिक गुण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. निम्न चंद्र क्षैत्र

ऊपर वर्णित दो क्षेत्रों में प्रथम क्षेत्र अर्ध चेतन तत्व तथा द्वितीय कल्पना व चेतन वाला हैं परंतु हथेली का अन्तिम छोर नीचे कलाई की तरफ वाला हिस्सा निम्न चंद्र क्षेत्र है।

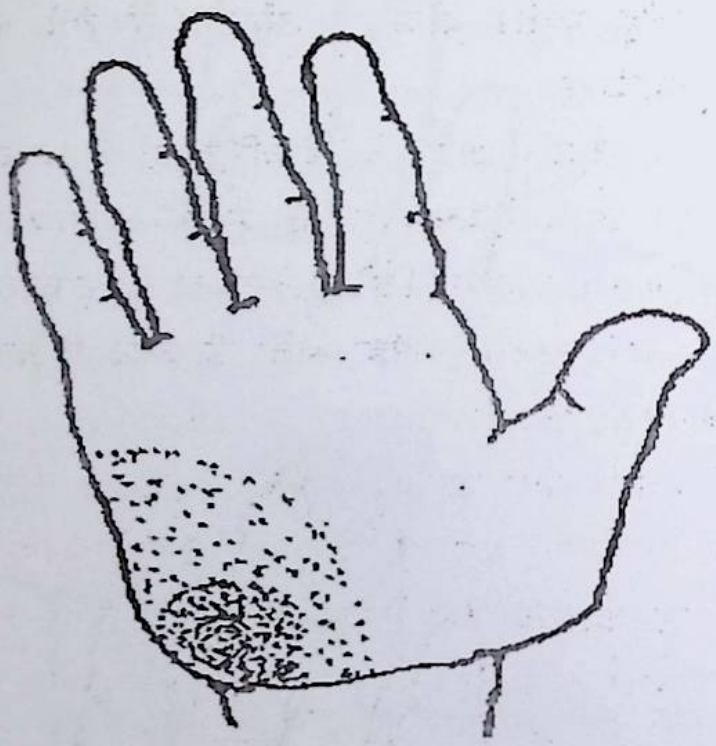

यह जातक की बुद्धि से सीधा संबंध बताता है। जातक में भौतिक प्रवृतियां होती है। वह अपनी कल्पना का उपयोग नये आविष्कार में लगाता है। वह व्यर्थ की काल्पनिक उड़ान नही रखता। वह सदैव आर्थिक दृष्टिकोण का इस्तेमाल करता हैं। इससे व्यक्ति स्वांवलंबी, अवसरवादी एवं चालाक हो जाता है परन्तु उसकी उन्नति काफी होती है। प्रायः सफल व्यवसायी व पूंजीपति इस क्षेत्र के उन्नत प्रभाव वाले होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र पर्वत क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है परन्तु अन्य पर्वत क्षेत्र, अंगुलियों की बनावट, अंगूठे की स्थिति इसके गुणों को प्रभावित करती है। **जो निम्न है।**

1. चंद्र पर्वत क्षेत्र व अंगुलियों की बनावट/ अंगूठे का आकार

चंद्र प्रधान क्षेत्र के विकसित होने व जातक का हाथ ठोस हो तो वह कल्पनाशील होने के साथ कर्मठ भी रहता है। अंगुलियां लंबी व सिरे नुकिले होने पर जातक कल्पनाशील, चित्रकार व कला मर्मज्ञ होता है और कला मे उच्च स्थान प्राप्त करता है।

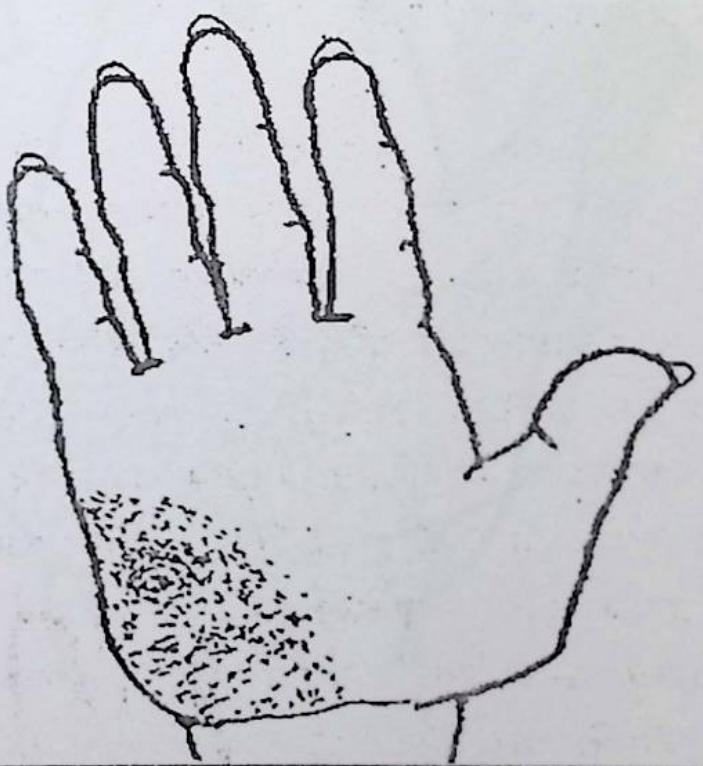

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गांठदार अंगुलियां होने पर कल्पना को साकार करने में वह समर्थ होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठा छोटा होने पर संदेह दृष्टि वाला व मानसिक रोगी रहता है।

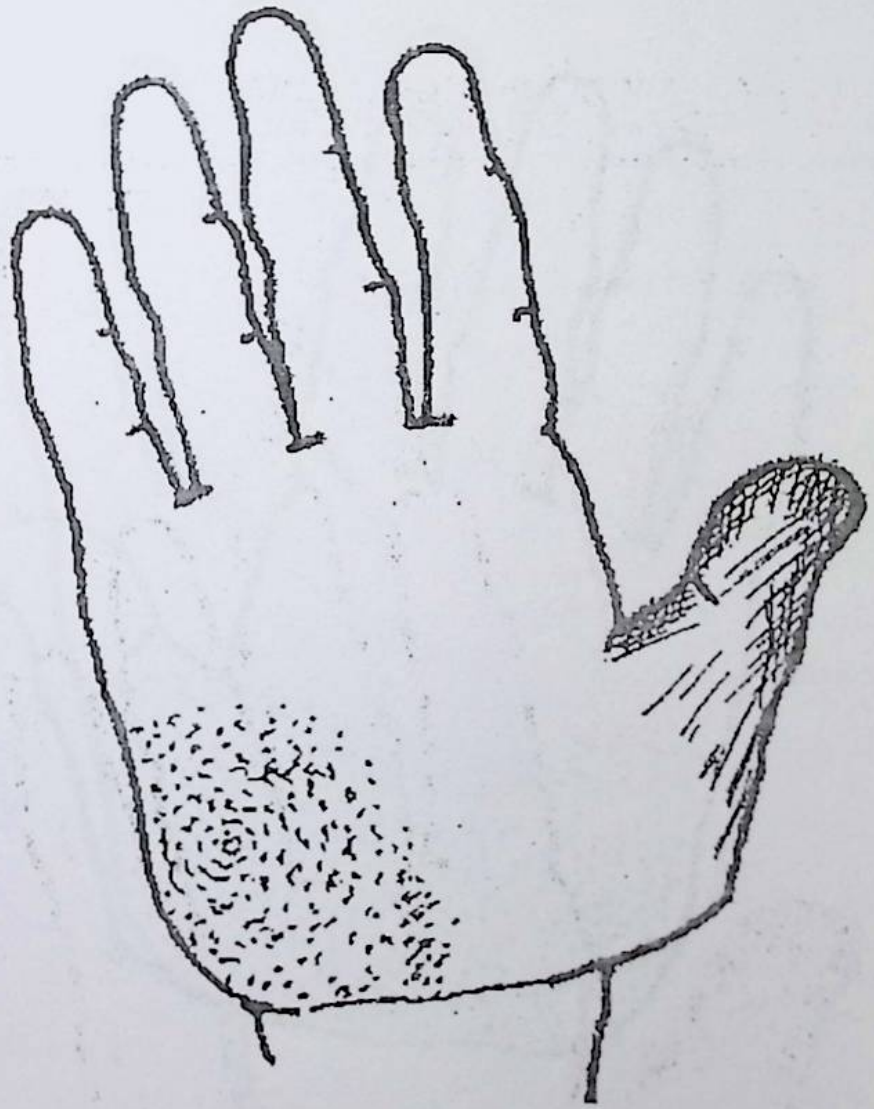

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहीं अंगूठा लंबा व लचीला होने पर शुभ फल कारक एवं बुद्धि जीवी होता हैं।

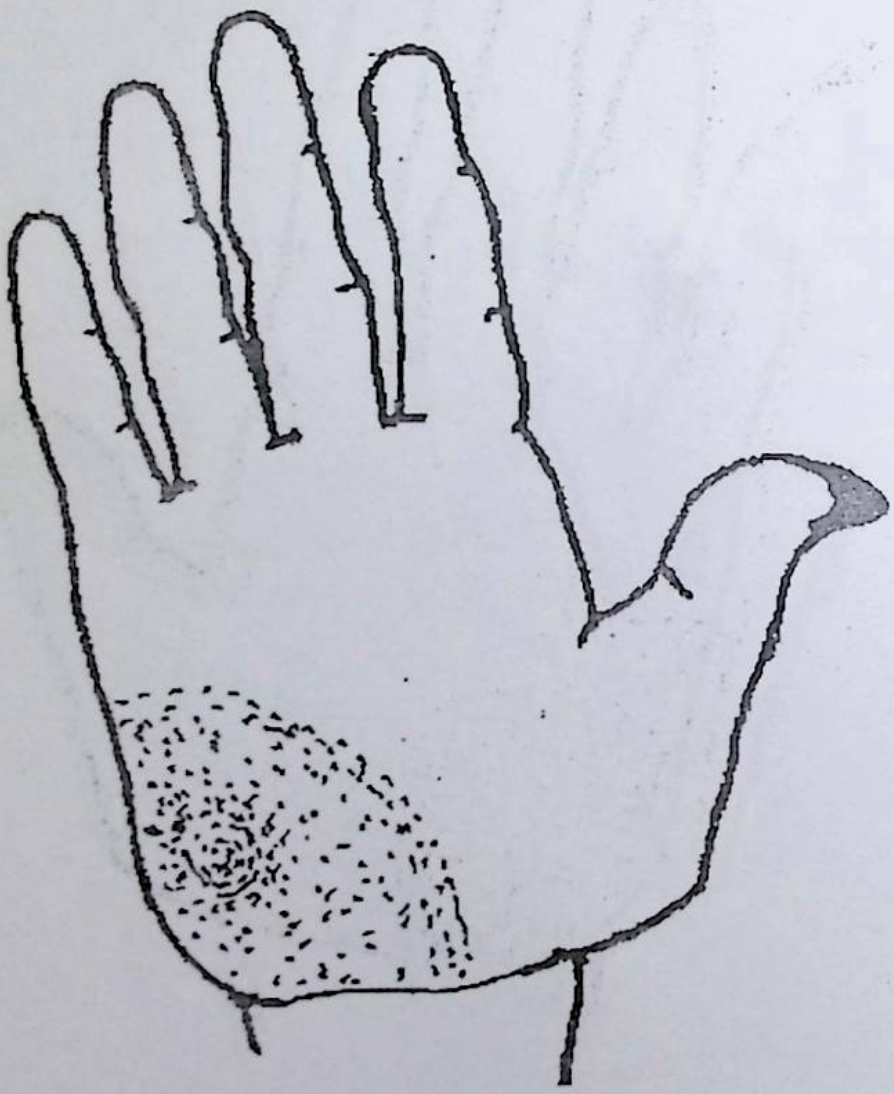

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोटी अंगुलियों वाला जातक बारिक कार्य व धातु के कार्य करने में प्रवीण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. चंद्र पर्वत क्षेत्र व अन्य पर्वत क्षेत्रों से संबंध

चंद्र ग्रह के प्रभावित रहने से चंद्र पर्वत क्षेत्र वाला जातक शीतल व ठंड़े स्वभाव के होते है। अतः इनके कार्य की गति प्रायः धीमी होती है। यदि चंद्र प्रधान जातक के अन्य ग्रह सूर्य, शुक्र, गुरू और मंगल क्षेत्र उभरे हो तो जातक में गर्म जोशी एवं कार्यशीलता बढ़ जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत क्षेत्र जातक को एकांत प्रिय बना देता है। जातक केवल एक कार्य को पकड़कर उसी में सलंग्न हो जाता हैं।

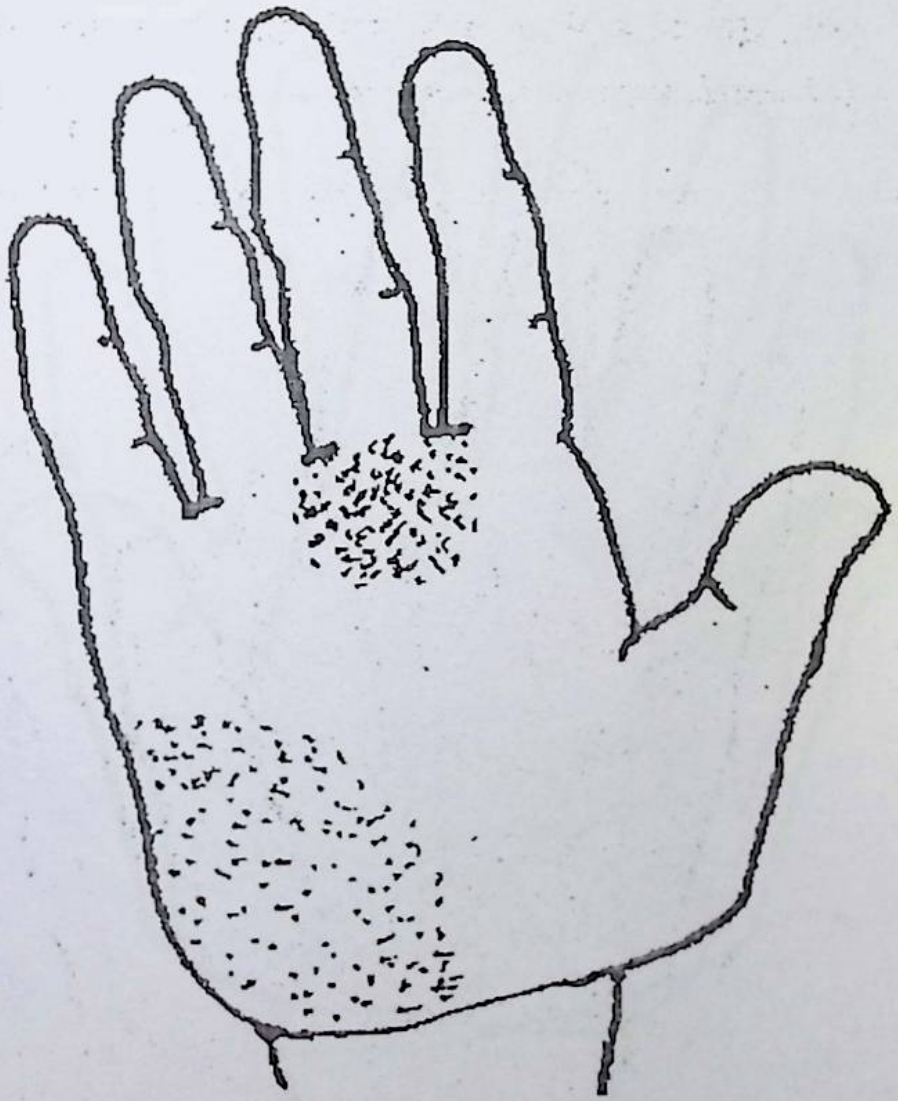

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध पर्वत क्षेत्र विकसित हो तो जातक स्वार्थ बुद्धि वाला होते हुए कपटी स्वभाव का हो जाता है परन्तु यात्राओं व व्यापारिक बुद्धि का धनी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. चंद्र पर्वत व चिन्ह व वर्ण

कमजोर व पतली हथेली में स्थित चंद्र पर्वत जातक को कमजोर व मानसिक रोगी बनाता है। त्रिकोण होने पर गुप्त विद्याओं को समझने वाला तथा तंत्र विद्याओं में पारंगत होता है।

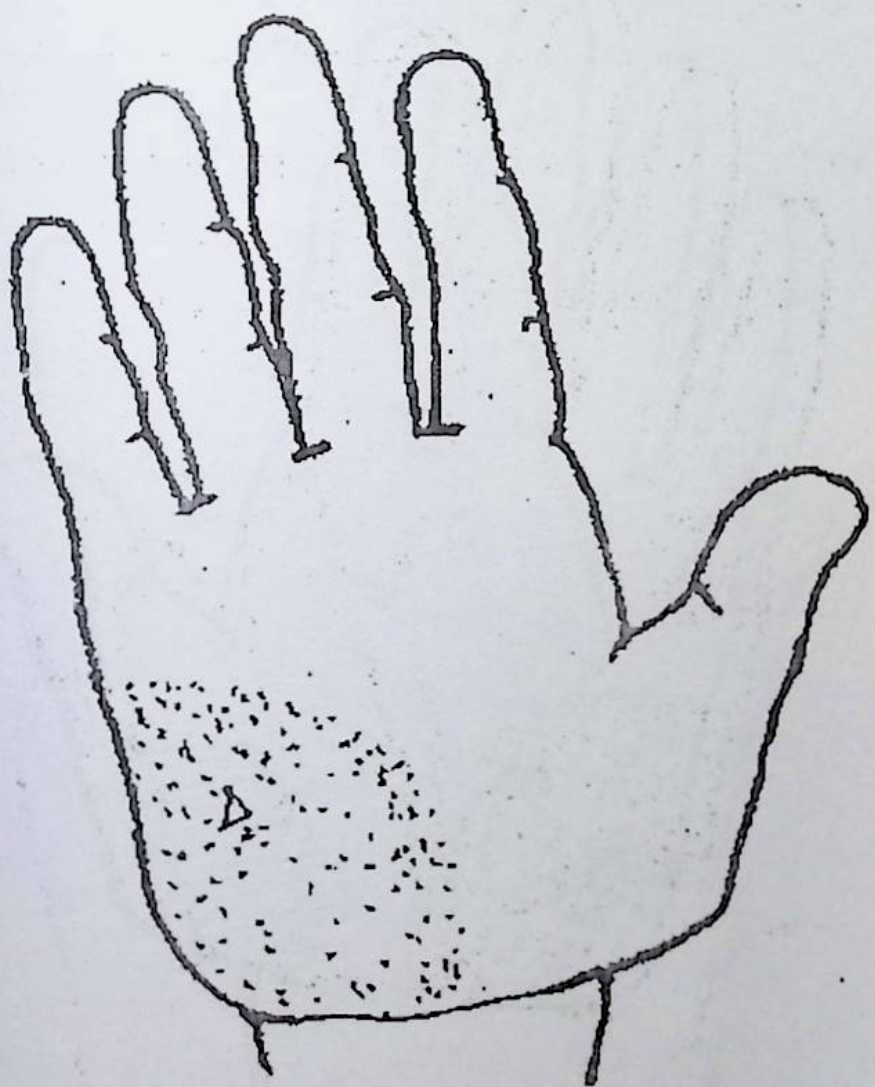

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाल व स्टार अंसतोष व उन्माद बढ़ाती है। चंद्र प्रधान व्यक्ति स्नायु मंड़ल के रोगें से ग्रसित रहते है। प्रायः चंद्र प्रधान व्यक्ति कई रोगों से ग्रसित रहते है परन्तु अन्य ग्रहों के विकसित रहने से दूषित प्रभावों से मुक्ति मिलती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. अविकसित चंद्र पर्वत

चंद्र पर्वत क्षेत्र प्रधान जातक कल्पना व मन की स्थिति के साथ बुद्धि का सामंजस्य कर उन्नति प्राप्त करता है। इसके विपरित यह क्षेत्र यदि दबा हुआ या अविकसित होने पर जातक का रूखा व्यवहार हो जाता है।

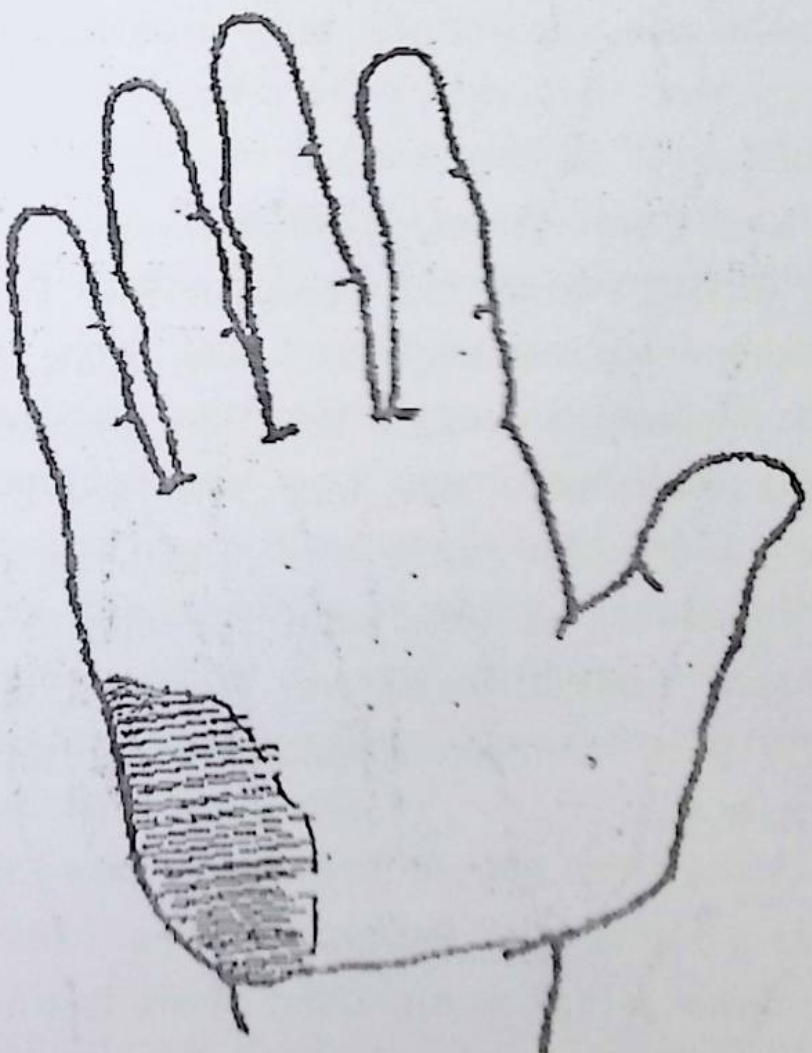

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कला के प्रति उसे कोई रूचि नहीं होती। उसके मित्र नहीं होते तथा उसका दामपत्य जीवन भी कलह पूर्ण होता है। उसे संतान सुख प्राप्त नहीं होता। एक ही स्थान पर उसका पूरा जीवन व्यतीत हो जाता है। मस्तिष्क में विकार रहने से वह मनोरोगी हो जाता है। कई तरह के रोगों से वह ग्रसित रहता है।

निष्कर्षः–

चंद्र पर्वत क्षेत्र दरअसल जातक की मनोवृत्ति व बुद्धि का संगम स्थल है। इसके द्वारा जातक के चित्त में कल्पना शीलता, मन की व्याकुलता, प्रेम भावना, सौंदर्य दृष्टि जो मनुष्य के जीवन को चलाने के लिये बहुत उपयोगी भाव है तथा यह फलित प्रदान करने वाला उत्तम क्षेत्र है। इसके निर्बल होने से जातक रोगी व कष्ट दायक जीवन जीने को बाध्य हो जाता है। चंद्र प्रधान व्यक्ति उच्च कोटि के संगीतज्ञ साहित्यकार, वैज्ञानिक, आचार्य तथा दिव्य गुणों के स्वामी होते है। इनकी सामाजिक भूमिकायें भी बड़ी विशिष्ठतांए लिये रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र पर्वत क्षेत्र

हथेली में अंगूठे के उद्गम स्थल व कलाई के समीप का विस्तृत भाग शुक्र पर्वत क्षेत्र कहलाता है। हथेली के रक्त वितरण का मुख्य केन्द्र बिंदु इसी क्षेत्र में होता है। मुख्य रक्त वाहनी इसी स्थल से बारिक कोशिकाओं द्वारा पूरे क्षेत्र को रक्त संचार करती है। एक ओर स्वास्थ्य वर्धक केन्द्र और दूसरी ओर अंगूठे का संबंध तंत्रिकाओं द्वारा सीधे मस्तिष्क से होता है। अर्थात हृदय व मस्तिष्क का संबंध स्थल शुक्र पर्वत क्षेत्र है। शुक्र ग्रह सौर मंड़ल में पृथ्वी के निकट स्थित है।

यही कारण है कि केवल शुक्र ग्रह ही हमें नग्न आंखों से दिन में भी दिखाई देता है। इसकी आभा बड़ी ही निराली होती है। समस्त तारा मंड़ल में यह एक सुनहरी आभा लिये रहता है। उसी प्रकार उन्नत शुक्र क्षेत्र जातक के व्यक्तित्व को निखारने के साथ सबसे अलग सौदंर्य प्रदान करता है। शुक्र प्रधान जातक शारीरिक रूप से स्वस्थ होते है। यह जल प्रधान ग्रह होने से व्यक्तित्व में चंचलता प्रदान करता है। शुक्र प्रधान जातक समाज में काफी लोकप्रिय होते है क्योंकि इनके व्यक्तित्व में एक आकर्षण व सम्मोहन विद्यमान रहता है। इनके मित्र काफी रहते है।

अतः इनके सभी कार्यो में कोई कठिनाई नहीं आती क्योंकि सभी लोगों का सहयोग प्राप्त होता है। स्वस्थ व उन्नत क्षेत्र से संतान उत्पत्ति व काम भाव का अभाव उत्पन्न होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र प्रधान जातक ही विश्व में प्रेम भाव व सद्भावनाओं का प्रचार करते है। सदैव समाज में कमजोर लोगों के दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करते है। इसी कारण शुक्र प्रधान जातक के अवगुणों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है

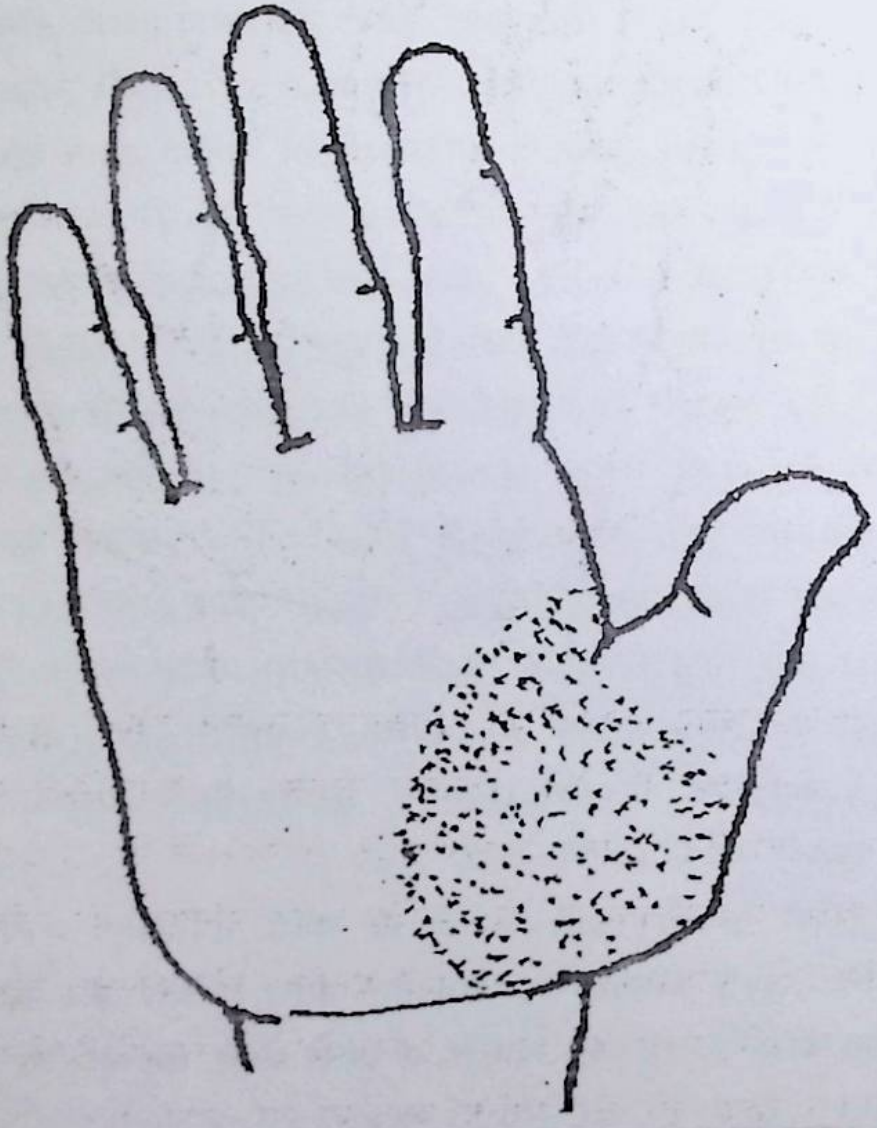

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्नत शुक्र क्षेत्र

अंगूठे के उद्‌गम स्थल तथा जीवन रेखा का भीतरी भाग यदि उन्नत हो तो यह उन्नत शुक्र क्षेत्र कहलाता है।

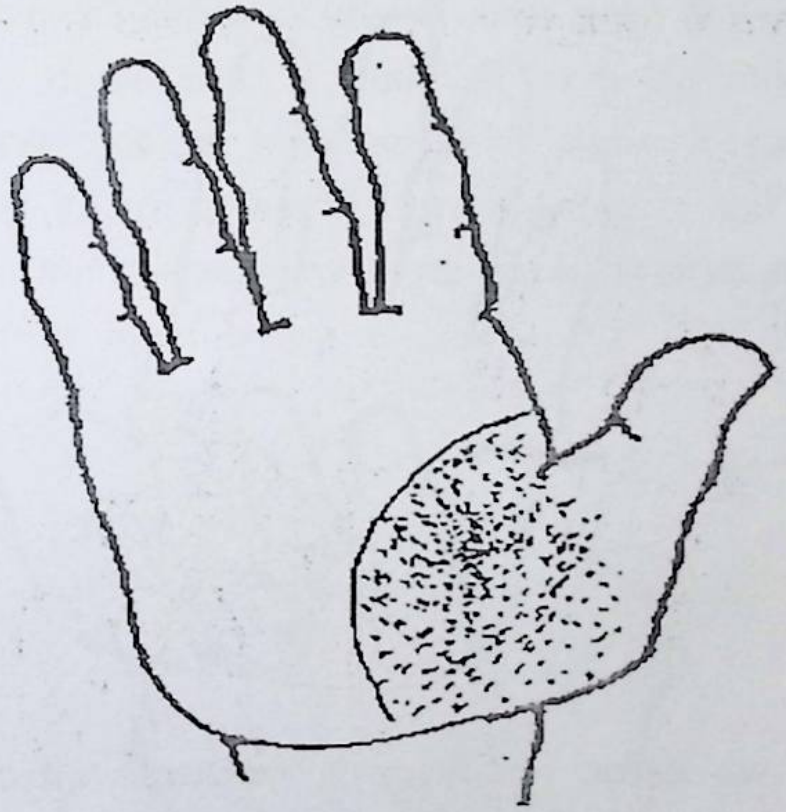

इस उभार स्थल का साधारण उभार होना शुभ माना जाता है। क्योंकि ऐसा जातक स्वस्थ व शारीरिक रूप से स्थुल होता है। इसके उन्नत होने से जातक में सौंदर्य दृष्टि, कामवासना, संतानोत्पादन शक्ति तथा संगीत के प्रति रूचि रहती है। जातक में आमोद-प्रमोद के मुख्य गुणों का प्रार्दुभाव भी होता है। यह जीवन के ऐसे घटक है जिनमें से एक भी कम हो तो व्यक्ति व्यथीत हो जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. अतिविकसित शुक्र पर्वत

शुक्र क्षेत्र जब अति उन्नत हो तब हथेली का यह हिस्सा काफी मोटा व लाल वर्ण वाला होता हैं।

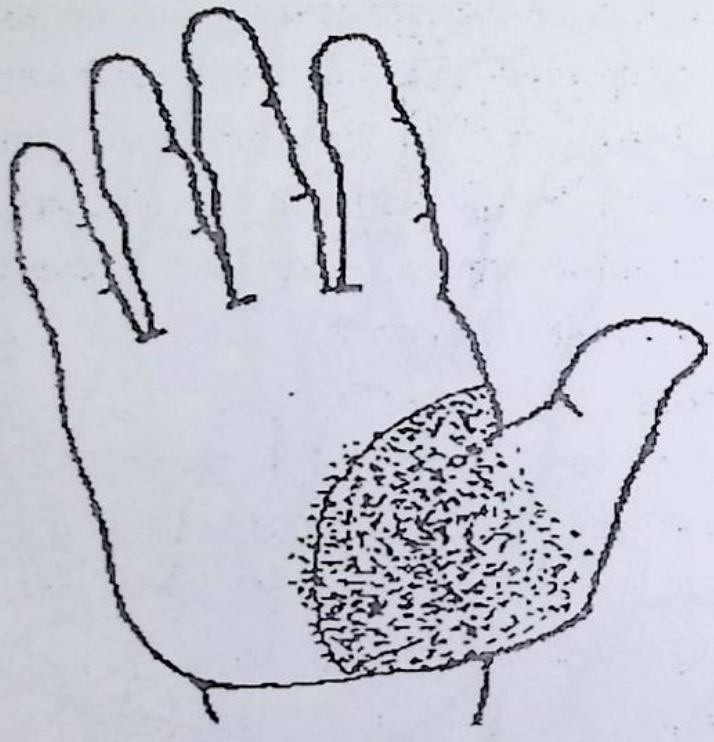

यह जातक को कामुक व व्याभिचारी बनाता है। काम भाव की अधिकता होने से जातक अपनी सारी शक्तियों को कामुक कार्यो में लगाकर जीवन को व्यर्थ करता है। यह हिस्सा कठोर होने पर जातक काम भाव में हिंसा का समावेश कर अपराधिक गतिविधियों में सलग्न हो जाता है। अति विकसित शुक्र प्रधान जातक मन-मौजी होते हुए खान-पान पर नियत्रंण नही रख पाते व आगे चलकर रोग ग्रस्त हो जाते है। प्रायः यह अशुभ ही माना जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. अविकसित शुक्र पर्वत

शुक्र पर्वत वह स्थल है जहां से रक्त वाहिनियों द्वारा रक्त का संचार होता है। इसके निर्बल होने से जातक का स्वास्थ्य कमजोर होता है। संतान उत्पत्ति में बाधा रहती है। व्यक्ति सौंदर्य दृष्टि के न रहने से एकांत में रहता है। मित्र व सहयोगी नहीं रहते है। जिस जातक के जीवन में प्रेम व अनुराग नहीं है। वह समाज में उचित स्थान प्राप्त नहीं कर पाता है। भौतिक साधना, वाहन, सुख–गृहस्थ सुख न हो तो वह अभागा ही कहलाता है।

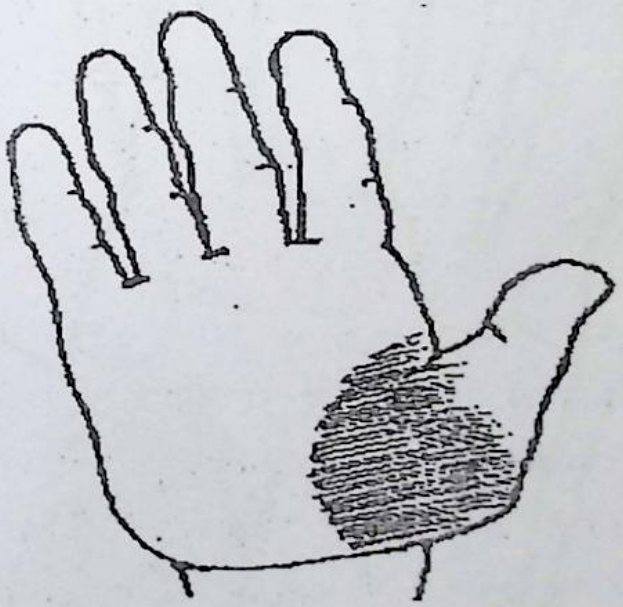

शुक्र क्षेत्र, प्रेम–अनुराग, काम भाव व जीवन रस जैसे मुख्य घटकों का कारक है। अतः इसके अन्य पर्व क्षेत्रों व अंगुलियों की बनावट के साथ एक विशिष्ट स्थिति निर्मित होती है जो निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. शुक्र क्षेत्र व अंगुलियों व अंगूठे की स्थिति

शुक्र क्षेत्र की हथेली में खुरदरा होना अशुभ है।

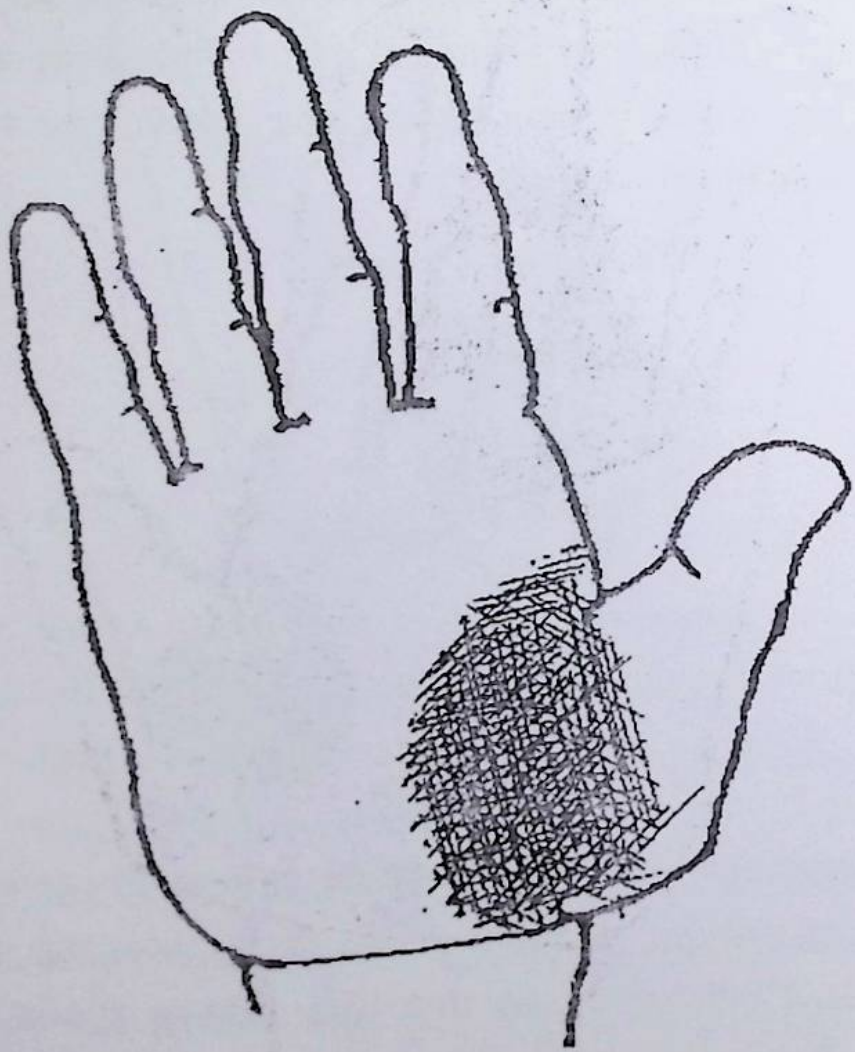

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पतली व सिरे पर नुकिली अंगुलियों के जातक कला क्षेत्र व मूर्तिकला में निपुर्ण होते है। इनकी चित्रकारी व रचनाओं में काम भाव ही मुख्य होता हैं।

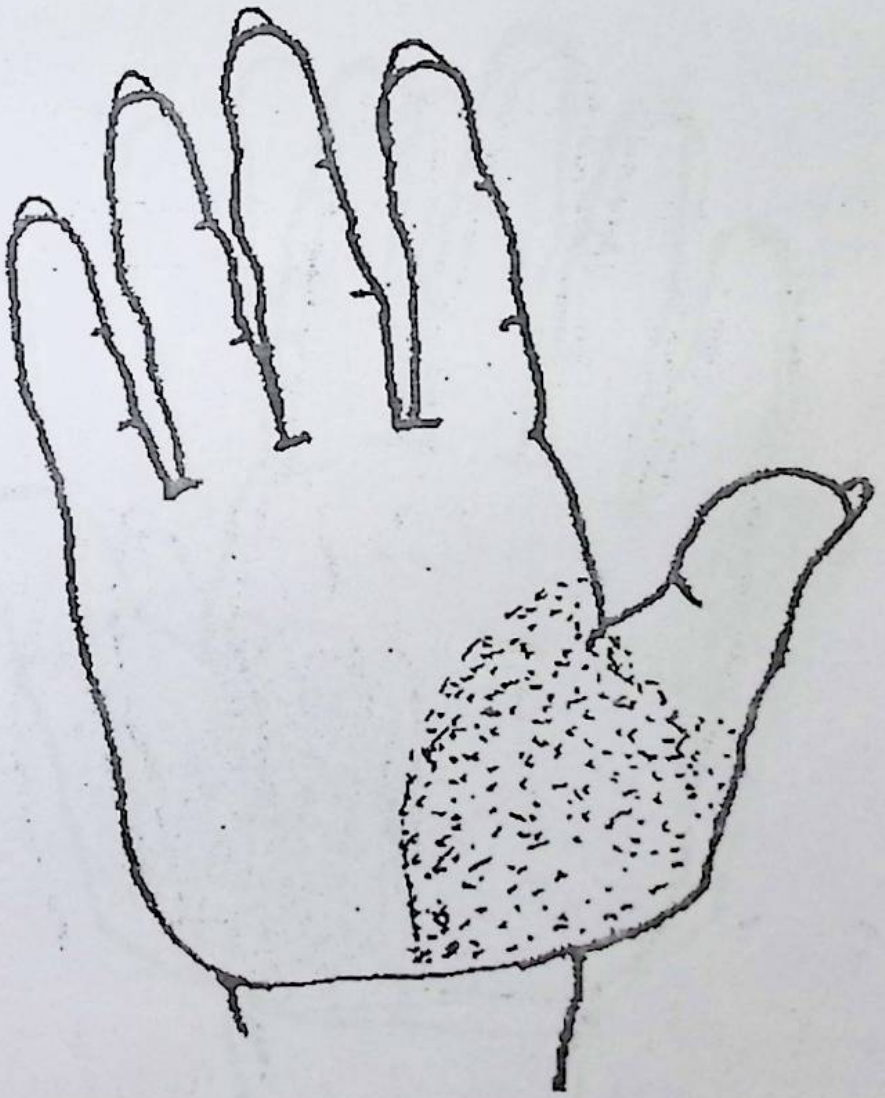

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौकोर सिरे व नख वाली अंगुली इसके मानसिक गुणों व संतुलन को बढ़ाती है। जातक सौंदर्य बोध के साथ बुद्धि का उपयोग कर एक अच्छा रचनाकार होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र प्रधान जातक का अंगूठा विशेष महत्व रखता है। अगर अंगूठा छोटा व स्थूल हो तो जातक हिंसात्मक भाव वाला व्याभिचारी होता है व अपराध जगत में प्रविष्ट हो जाता है।

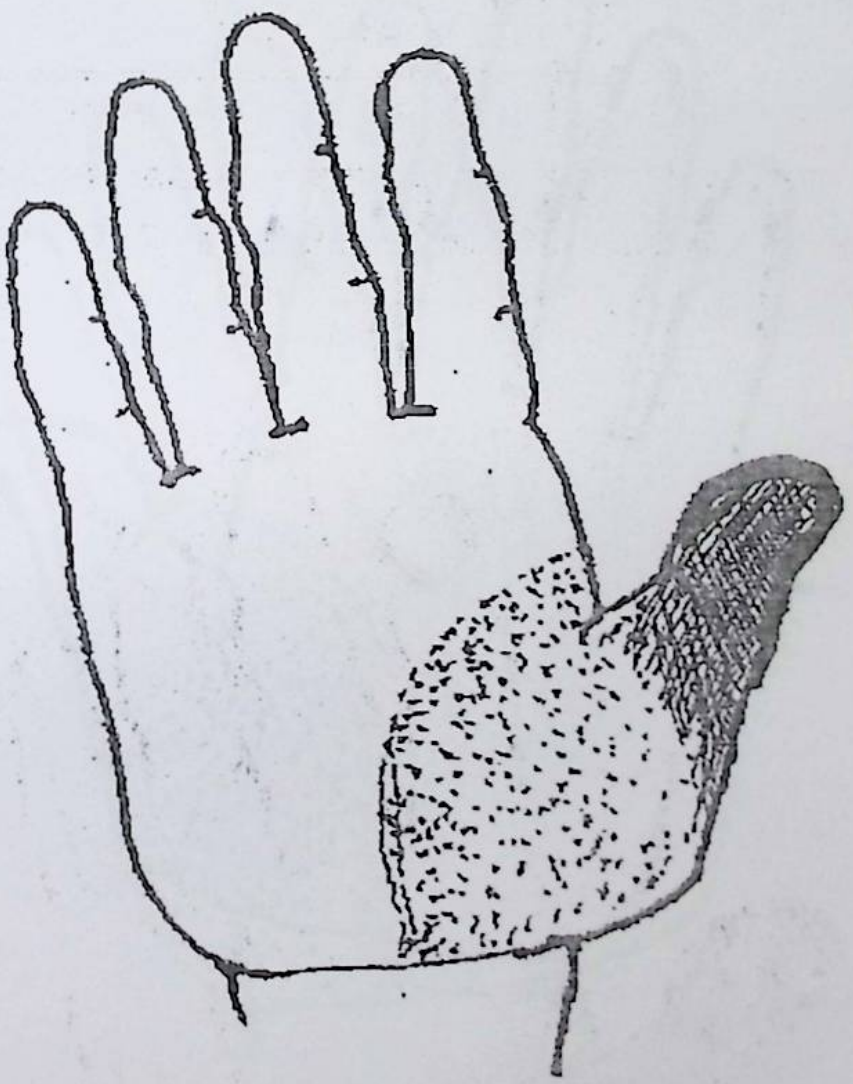

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहीं लंबा व लचीला अंगूठा व्यक्ति के काम भाव में संतुलन व भौतिक व सांसारिक जीवन में सौम्यता प्रदान करता हैं।

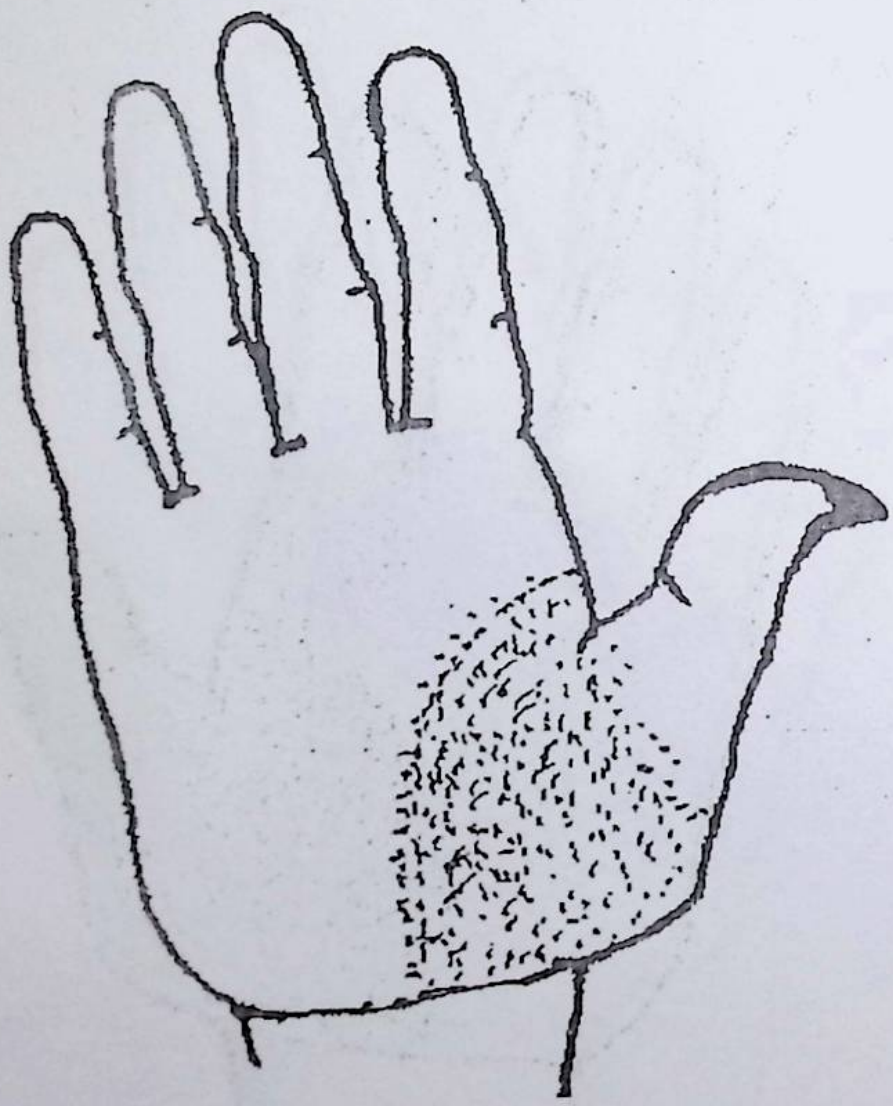

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शुक्र पर्वत क्षेत्र व अन्य पर्वत क्षेत्रों से संबंध

शुक्र से उठकर गुरू पर आने वाली रेखाएं सबसे शुभ होती है। ऐसा व्यक्ति, यश व कीर्ति के साथ धर्म की ओर प्रवृत्त होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पर्वत के विकसित होने पर जातक भौतिक सुखों का स्वामी होता है।

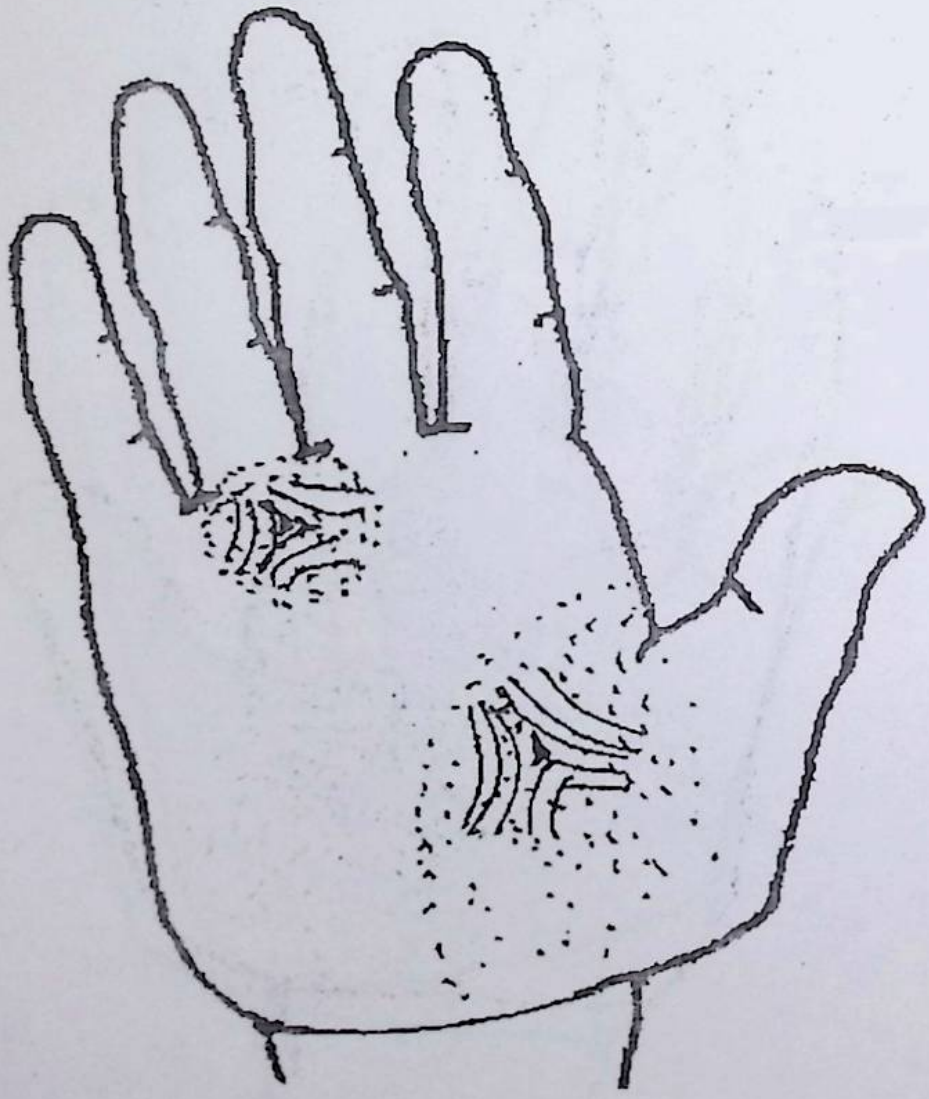

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल क्षेत्र व शुक्र क्षेत्र बराबर उन्नत होने पर काम भाव में संतुलन नही रख पाता है व अनुचित कार्य भी कर लेता है। जो आगे चलकर अपराधिक पृष्ठ भूमि का हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. शुक्र पर्वत क्षेत्र, चिन्ह व वर्ण

शुक्र पर्वत का लाल होना अधिक काम भाव व वासनाओं का सूचक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस क्षेत्र पर त्रिकोण कार्य कुशलता का सूचक है। जातक अपने कार्य में स्वार्थ बुद्धि का प्रयोग करता है। उचित व अनुचित का भेद नहीं समझ सकता।

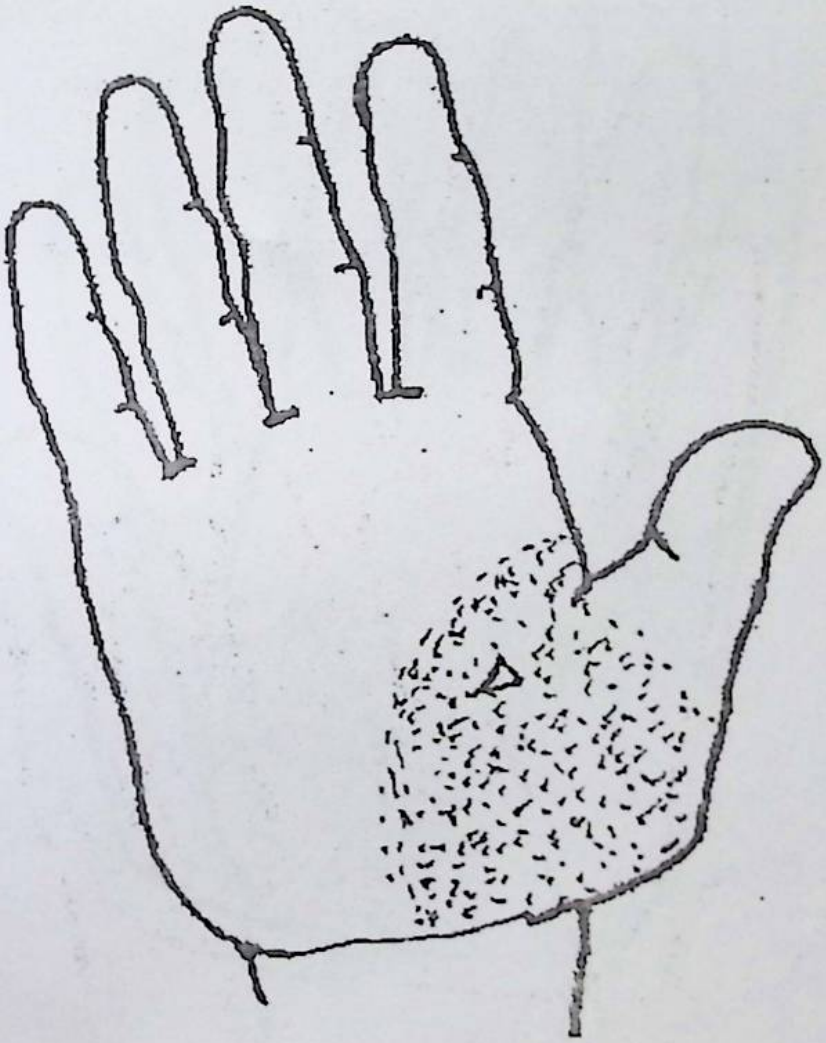

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रास का चिन्ह उसे अनुपम सौंदर्य व सम्मोहन शक्ति प्रदान करता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक काम कला में निपुर्ण व लोकप्रिय होता है परन्तु द्वीप व जाल का चिन्ह उन्हें छल कपट और अपराध की ओर अग्रसर करता हैं।

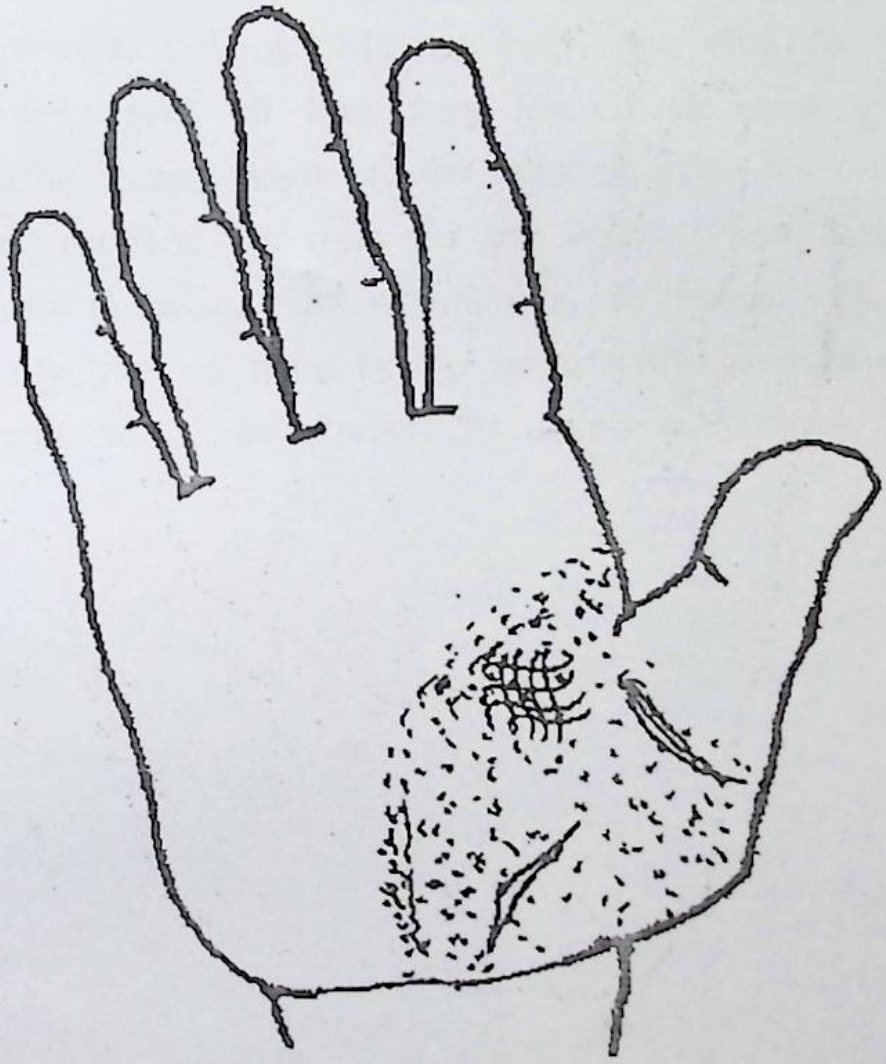

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्कर्ष

शुक्र पर्वत क्षेत्र जातक के जीवन में रस, प्रेम भाव, संतान, आमोद-प्रमोद जैसे मुख्य घटकों का निर्धारण करता है। इसका अति उन्नत होना हानिकारक है। क्योंकि काम भाव की अति उसे सामाजिक दृष्टि से नीचे गिरा देती है। परन्तु अन्य शुभ लक्षणों दूसरे ग्रहों के साथ युक्ति इनके व्यक्तित्व में चार चांद लगा देते है। परन्तु इसका अविकसित होना जातक में सौंदर्य बोध को खत्म कर शारीरिक निर्बलता देता है। जातक में सन्तानोत्पत्ति का अभाव हो जाता है। अतः दाम्पत्य जीवन कलह पूर्ण हो जाता है। अतः शुक्र पर्वत क्षेत्र उन्नत होना जातक के सुखमय जीवन का आधार है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh